अनुभव

(काव्य-संग्रह)

अनुभव

(काव्य-संग्रह)

लेखिका

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-93-90580-07-1

कर्म-बद्ध-संकल्प
के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली
मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश
शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301
दूरभाष :- 9871932895, 9868089950
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

मूल्य : 350.00 रुपये
© बिमला रावर
प्रथम संस्करण : 2002
द्वितीय संस्करण : 2020
आवरण : बिमला रावर सक्सेना
मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

Book Name ANUBHAV
by. BIMLA RAVAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

यह काव्य संकलन मैं

अपने पति

स्वर्गीय श्री सत्य प्रकाश रावर

की स्मृति में

सादर

समर्पित करती हूँ।

अभिव्यक्ति

मेरा यह काव्य संग्रह माँ सरस्वती के चरणों में अर्पित तुच्छ भेंट है। कविता भावनाओं की अभिव्यक्ति है। मेरे जीवन के विशेष क्षणों के मित्र, मेरे अनुभव ही इन कविताओं में अभिव्यक्त हुए हैं। मैंने अपने अन्तर की अनुभूतियों को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है। मैंने जीवनभर अध्यापन किया। माँ सरस्वती की अनुकंपा से अपनी भावनाओं को संग्रहीत करती रही और अब इनको माँ सरस्वती और समाज को अर्पित करने का संतोष प्राप्त कर रही हूँ।

यह कहना कठिन है कि कविता का ध्येय क्या है। कविता केवल काव्य सुख है, अथवा जीवनदर्शन प्रस्तुत करने का प्रयास है। कवि तो केवल सौन्दर्य का दर्शनाभिलाषी होता है। जहाँ सौन्दर्य के दर्शन हुए वहाँ वह उसको अपने हृदय में संकलित कर लेता है और समय आने पर भावनाओं की धारा सारे बन्धन तोड़कर बह निकलती है। सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् की अनुभूतियाँ कविता के रूप में निर्बाध गति से प्रवाहित होने लगती हैं। अतः मेरे विचार में कविता का कोई निश्चित् स्वरुप नहीं होता। प्रत्येक कवि कविता के रूप को अपनी भावनाओं से संवारता है।

हर व्यक्ति की भाँति मेरे जीवन में भी सुख और आते-जाते रहे। मैंने उन्हीं क्षणों की अनुभूतियों को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है। आशा के क्षणों में आशावादी और निराशा के क्षणों में निराशावादी होना स्वाभाविक है किन्तु प्रयास यह है कि प्रत्येक अनुभव और प्रत्येक अनुभूति से समाज का कल्याण की ओर जाने वाले मार्ग प्रशस्त हो।

मैं अपने उन सभी साथियों की आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी कवितायें सुनी और मुझे लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

- बिमला रावर सक्सेना

अनुभव से अनुभव तक का सफर

मेरे काव्य-संग्रह ''अनुभव'' का प्रथम संस्करण वर्ष 2002 में मेरे पुत्र रवि सक्सेना व पुत्रवधू पल्लवी सक्सेना ने मेरी सेवानिवृत्ति के समय प्रकाशित करवाया था। यह मेरा प्रथम प्रकाशित काव्यसंग्रह था। उसके बाद ''अनुभव'' पढ़कर एक पाठक का फोन आया, और वे एक मसीहा के रूप में मेरे जीवन में आए, जिनका नाम था श्री केदारनाथ शब्द मसीहा। आज मेरे बारह काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके प्रकाशन का सारा परिश्रम केदारनाथ जी द्वारा हुआ, अन्यथा उनकी यह वृद्धा दीदी माँ क्या भाग-दौड़ कर सकती थी। सुधि पाठकों ने ''अनुभव'' को सराहा, और अब 18 वर्ष पश्चात दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

मेरी कविताओं के विषय में मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि कविता की नन्ही तुकबंदियाँ बचपन से चल रही थीं। फिर नवम- दशम श्रेणी से लिखकर रखना शुरू कर दिया। वैसे मेरी सखियाँ मुझे गायिका बनाना चाहती थीं। मेरी आदरणीया शिक्षिकाएं अपनी शिष्या में एक डॉक्टर देखना चाहती थीं, लेकिन भाग्य और हालातों ने मुझे शिक्षिका बनाया, जिससे मुझे हजारों बच्चों को पढ़ाने का अवसर मिला। मैंने पूर्णनिष्ठा से अपना कार्य किया। माँ सरस्वती की सेवा की, और उनका आशीर्वाद मिला। वे कवितायें जो मैंने सहेजकर अलमारियों में बंद कर रखीं थीं। वे कवितायें सेवानिवृत्ति के बाद समय मिलने पर अलमारियों से निकलकर प्रकाशन संस्थान तक पहुँचने लगीं। उनको पहुंचाने वाले थे, मेरे मसीहा केदारनाथ शब्द मसीहा।

आशा है मेरी सीधी-साधी कविताएं दैनिक बोलचाल की भाषा और हृदय तक सीधे पहुँचने वाले शब्दों द्वारा पाठकों के हृदय तक पहुँचने का प्रयास करेंगी।

शेष मेरे सुधी पाठक ही बताएंगे। कविताओं के विषय में दो शब्द यही हैं कि अपने जीवन में घर-परिवार, समाज, देश, नदिया, सागर, पर्वत,

कंदर, सुख-दुख, की घटनाएं, राजनीति, वोटनीति की चालें, सड़कों के हादसे आदि, जो भी आसपास देखा, महसूस किया, वही शब्दों में ढल गया। मैं उन सभी साथियों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरी कविताएं पढ़ी-सुनी और मुझे प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया। मैं के बी एस प्रकाशन के श्री संजय 'शाफ़ी' जी को उनके स्नेहपूर्ण सहयोग और परिश्रम के लिए हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। केदारनाथ शब्द मसीहा जी को बहुत-बहुत स्नेह आशीर्वाद।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
नई दिल्ली- 110018
दूरभाष- 011- 25533221

मूल्यों की अनुभूति और अभिव्यक्ति- ''अनुभव''

श्रीमती बिमला रावर ने अपनी प्रथम प्रकाशित पुस्तक ''अनुभव'' के माध्यम से काव्य क्षेत्र में प्रवेश किया है। रचनाओं के अध्ययन से इतना तो स्पष्ट होता ही है कि बिमला जी ने एक यथार्थवादी रचनाकार के रूप में स्वयं को आगे लाने का प्रयास किया है। बिमला जी की यथार्थवृत्ति जिन तूफानों को छूती रही है, उसकी अभिव्यक्ति जितनी स्पष्टता से हुई है, उस दृष्टि का आभास रचनाओं में होता है। कवयित्री के यथार्थ व्यक्तित्व का मूलबिंदु जीवनमूल्य हैं। अपनी रचना ''सागर और मैं'' में कवयित्री ने एक आत्मा की चाह का मानवमात्र में होना स्वीकार किया है। कौन समग्रता को प्राप्त करना नहीं चाहता, यथा अर्थ यह स्थिति प्राणीमात्र में देखी जाती है। संग्रह की कविताओं में कुछ गीत भी हैं।

उनकी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक प्रश्नों में उलझावपन और यथार्थोन्मुखता भी है। प्रायः अधिकांश रचनाओं में जीवन को पकड़ने का आग्रह मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि रचनाओं में जो उन्मेष है, वह कोरा पुस्तकीय ज्ञान नहीं है, अपितु रचनाकार के व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त है। यह अनुभूति यथार्थ की कविताओं को जन्म दे पाने में सक्षम सिद्ध हुई है। जैसे ''टप टप टपके छप्पर से पानी'', ''नींद और ख्वाब दोनों उड़ जाएंगे''। आगे कविताओं में भी यथार्थपूर्ण और यथा संकेत साक्ष्य प्राप्त होते हैं। सच यह है कि संग्रह की रचनाओं में सभी को अपनी छवि दिखाई देती है, विशेषतः नारीवर्ग को बिमला जी की यथार्थवृत्ति का आधार उनका अपना परिवेश, जीवन की घटनाएं एवं अनुभव तो हैं ही। उनकी व्यापक दृष्टि एवं सोच भी है, जिससे आपबीती रचनाएं जगबीती बन बैठी हैं। इन रचनाओं में सिद्धांत के साथ-साथ जीवन भी बोलता है।

बिमला जी का काव्यशिल्प, काव्यकला का प्रगतिशील पक्ष है। अतुकांत रचनाओं में यथा-अर्थ मौलिकता एवं प्रामाणिकता स्पष्ट है।

वह एक सांकेतिक चित्रण की रचनाकार हैं। कवियत्री की यथार्थवृत्ती किसी वाद में समाहित नहीं की जा सकती है, यह अच्छा ही है।

भाषापक्ष से तो ये रचनाएं जीवन की भांति स्पष्ट प्रवाहमान, विश्वसनीय तथा बूँद से मोती का आधार ग्रहण करने तक की यात्रा में जीवन्त हैं।

कवयित्री को साधुवाद।

डॉ. पुष्पेंद्र वर्णवाल

मुरादाबाद

आमुख

मुझे हर्ष है कि श्रीमती बिमला रावर का प्रथम काव्य-संग्रह प्रकाशित होने जा रहा है। इस भौतिकवादी संसार के लिये कविता प्रकाशपुंज है। श्रीमती रावर का काव्य संग्रह उनके जीवनभर के चिन्तन का परिणाम है। उन्होने समाज की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है और उनसे जूझने के लिए लोगों को प्रेरित किया है। जीवन एक निरन्तर संघर्ष है, फिर भी प्रयास यही होना चाहिये कि किसी दिग्भ्रान्त पथिक को एक नई दिशा दी जाए। जातिभेद और रंगभेद से पीड़ित इस समाज के लिए श्रीमती रावर का एक ही सन्देश है- सब समझ लें कि सबका पिता एक है और उनकी कामना है- प्रेम की, प्यार की, सुख की वीणा बजे। श्रीमती रावर को बड़ा कष्ट है कि वोट की वेदी पर निरपराध व्यक्तियों की बलि दी जाती है। नारी के शोषण से व्यथित कवयित्री नारी जाति को याद दिलाती है कि नारी शक्ति-रुपा है। संभवतः जीवन के प्रत्येक पक्ष पर श्रीमती रावर ने अपने भाव व्यक्त किए हैं। प्रति ने कभी सागर के रूप में, कभी बादल के रूप में, कभी पुष्प के रूप में प्रकट होकर श्रीमती रावर को प्रेरणा दी है, और उनके हृदय को प्रेम और मानवता की भावनाओं से भर दिया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज समाज को मानवता के शाश्वत मूल्यों की आवश्यकता है। जैसे-जैसे समाज इन मूल्यों को छोड़ रहा है, वैसे-वैसे बर्बरता और दानवता की ओर अग्रसर हो रहा है यह कोई नया विचार या दर्शन नहीं है, किन्तु बड़ी आवश्यकता है इस बात की कि हम इनकी महत्ता का प्रतिपादन बार-बार करते रहें। यह कार्य श्रीमती रावर ने बड़े सहज भाव से किया है। मुझे विश्वास है कि उनकी कविताएँ सहृदय पाठकों को शाश्वत मूल्यों की रक्षा के लिए प्रेरित करेंगी।

प्रेमसागर
एम.ए.पी.एच.डी., दिल्ली
सेवा निवृत रीडर-अंग्रेजी विभाग,
हिन्दू कालेज - मुरादाबाद

तिथि : 15-12-2001

पत्र

स्नेहमयी बहन विमला जी,

बचपन से साहित्य एवं समाज सेवा में मेरी गहरी रुचि रही है। कादम्बिनी मार्च 2012 के अंक में आपकी कविता 'तो मैं भी कवि हूँ' पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। बधाई स्वीकार हो। कविता में परिलक्षित आपके भाव मानव को देश, समाज, धर्म सबके लिए सोचने को मजबूर करते हैं। आशा है आपकी क़लम सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी कविताओं को जन्म दे, क्योंकि आज इसी की अनिवार्यता है।

आपकी पुस्तक 'अनुभव' प्राप्त हुई। जब से पुस्तक मिली 30-32 कविताएं पढ़ पाया। इसलिए अभी प्रतिक्रिया लिख नहीं रहा हूँ। सारी कविताएं पढ़कर फिर पत्र लिखूँगा। सागर को खँगालना बहुत कठिन होता है, और कविता एक नदिया रूप होती है। पुस्तक तो सागर है। पढ़ना, रखना, सोचना फिर टहलना और प्रत्येक अनुभवों का अहसास करना। यह दर्द इतना आसान नहीं है कि एकदम व्याख्या कर दी जाए। मैं पूरा पढ़कर प्रतिक्रिया व्यक्त करूँगा।

बैकुंठधाम की सेवा के पश्चात जो भी समय मिलता रहा रोज आपकी आठ-दस कविताएं पढ़ता रहा। पूरे जीवन काल में हजारों पुस्तकें, हजारों पत्र, पत्रिकाएं पढ़ी हैं। सभी पुस्तकों में छपी सारी रचनाएं हृदय को छू लें जरूरी नहीं होता। हाँ, पूर्वकालीन लेखकों की रचनाएं भारतीयता का प्रतिबिंब होती थीं, जिनमें मुंशी प्रेमचंद मेरे प्रिय लेखक थे।

आपकी 114 रचनाएं मैंने बड़े मनोयोग से पढ़ीं। मेरा दिमाग़ इतना उद्वेलित हो जाता था कि सागर के इन मोतियों को क्या नाम दूँ, क्या व्याख्या करूँ। एक-एक अनुभव को, एक-एक दर्द को, कैसे शब्द दूँ, एक-एक काव्य जीवन दर्शन बनकर उभरा है। मैं एक सप्ताह से आपकी पूरी पुस्तक पढ़कर बैठा हूँ। इस बीच एक अन्य बहन की पुस्तक आई, पढ़ी और उत्तर दे दिया। आप की पुस्तक का उत्तर देना इतना सहज नहीं लगा, पत्रोत्तर देना भी जरूरी है। शायद आपने जीवन के हर अनुभव को हथेली से लहू बहाकर लिखा

है, शायद एहसासों के आँसुओं ने भी भिगोया होगा। कैसे जीवन के हर पहलू को, विषय को व्यक्त किया। 'एक वसीयत बच्चों के नाम', 'इंसान भगवान बन जाए', 'मानवता की मृत्यु', 'मरे हुए रिश्ते', 'डोर थाम लो', 'ख़ून के आँसू', 'सागर और मैं', कुछ नाम लिख रहा हूँ। आपकी काव्यधारा सभी 114 कविताओं में संवेदनशील, प्रेरणादायक, निर्देशात्मक है। 50 वर्षों के पत्र लेखन के चलते-चलते आज इस सागर रूपी पुस्तक 'अनुभव' के माध्यम से बिमला बहन रूपी दीपक तक पहुँचा हूँ।

आपका भैया

किशोर गांधी

मरघट की माटी से जुड़ा 'ममत्व' सा रिश्ता

न्यूज सर्विस

इंसानियत की सच्ची सेवा में लीन है किशोरदास गांधी

प्रकाश-स्तंभ 'चले श्मशान की देहरी वहीं है साथ की संज्ञा'

बीकानेर में बापू न सही 'गांधी' तो हैं!

■ [illegible]

बीकानेर, 30 नवम्बर। 'चले श्मशान की देहरी वहीं है साथ की संज्ञा' यह [illegible] [illegible]

वह व्यक्ति कोई और नहीं [illegible] [illegible] किशोरदास गांधी है जो [illegible]

[illegible]

1991 में इस भूमि का खाका [illegible] था, जहां अब तक [illegible] आकर रुक चुकी है और प्रत्येक का इस गांधी ने आदर किया और साथ आने वालों के आंसुओं में अपने दिवंगत [illegible]

इस कल्याण भूमि में कोई भेदभाव नहीं है। [illegible] सभी एक ही [illegible] हैं। [illegible]

एक अच्छी खबर

तमाम लावारिस लाशों का समान भाव से दाह संस्कार गांधी अपनी देखरेख में करवाते हैं। [illegible] इस कल्याणी भूमि को सुव्यवस्थित करने में [illegible] दिया है।

किशोरदास गांधी कल्याण भूमि में आने वाले प्रत्येक जन से [illegible] [illegible]

लिए सहयोग एकत्रित करते नहीं थकते। वे केवल दाह संस्कार नहीं करते अपितु [illegible] अस्थि फूल [illegible] हरिद्वार भेजकर गंगा में प्रवाहित करने की व्यवस्था भी स्वयं करते हैं।

गांधी के साथ पांच-छह कर्मचारी [illegible] भूमि में [illegible] उनके निरंतर प्रयास से श्मशान भूमि का परिसर छायादार [illegible] हरियाली से एक खूबसूरत बगीचा बन गया है, जहां शोकाकुल लोगों को सकून मिलता है।

किशोरदास गांधी

बतौर [illegible] में [illegible] से सेवानिवृत्त हो गए हैं, लेकिन सेवाकाल के दौरान से ही वे इस पुनीत कार्य से जुड़े हैं और उनका कार्य निरंतर जारी है।

इसी कार्य को व्यवस्थित करने के लिए गांधी ने अपने सरीखे 10-12 व्यक्तियों के साथ इस भूमि को कल्याण भूमि न्यास के रूप में रजिस्टर्ड करवा लिया है। जिसका हर काम व्यवस्थित, अनुशासित एवं [illegible] भाव से होता है। वे कहते हैं कि मैं रो-रो कर थक गया हूं, फिर भी तमन्ना यह है कि जीवित रहते यहां आने वाले हर व्यक्ति के आंसू पोंछता रहूं।

उनके गमों को दूरकर स्वयं सवाल में [illegible] रहूं कि कोई... बात पूरी नहीं हुई थी कि उनके एक सहयोगी ने सूचना दी कि एक शव यात्रा आई है, और गांधी चले गए एक और पुण्य कार्य करने। ऐसा दिन में जितनी ही बार होता है और वे [illegible] तरह लगे हैं [illegible] में।

[illegible] एवं [illegible] प्राप्त कर लेने की इस आपाधापी के दौर में कहीं न कहीं आज भी 'बीकानेरी गांधी' मिल ही जाते हैं। अब भी मनुष्यता बची है इस भावना में जहां [illegible] का हिसाब रखना इस कार्य की महत्ता और साथ बताने में मददगार साबित हुआ है। मनुष्य के आखिरी पड़ाव की पहरेदारी बदस्तूर जारी है।

पत्र

बिमला जी,

पुस्तक पढ़ी, सभी कवितायें ज़िन्दगी के सूक्ष्म अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। भाषा की सहजता और लयपूर्ण शैली ने विशेषरूप से प्रभावित किया। शब्दों में एक पुकार का प्रवाह है, जो कविता की अंतिम पंक्ति पर भी कभी-कभी रुकने को नहीं चाहता।

अतीत और भविष्य के बीच वर्तमान को महसूस करती कवितायें, जीवन के विभिन्न संघर्षों को छूती हैं। संवेदनाएँ और भाव को बारीकी से पकड़ने की कोशिश भी नजर आती है, जो काफी हद तक सफल रहीं है। कुछ खास पल, जो कवितायें पढ़ने के समय मुझे थमने को विवश करते रहे हैं। मैंने अवचेतन में रेखांकित कर दिये हैं। बस यह मेरी गलत आदत है, लेखनी और मन को अलग नहीं रख पाता।

सच ही -
'अनुभव समझता है
अनुभूति समझती है।'

सृजन के लिए हार्दिक बधाई।

जसवीर
(मुख्य सामग्री प्रबन्धक, भारतीय रेल)
05.04.2002

हितेश कुमार शर्मा	गणपति भवन सिविल लाइन्स
एडवोकेट	बिजनौर -246701 (उ प्र) भारत
पूर्व गवर्नर रोटरी अंतर्राष्ट्रीय	फोन नं - 1342- 262085
संपादक- ब्राह्मण अंतर्राष्ट्रीय समाचार	मोब नं. 093199 35979

दि. - 05-07-2011

समादरणीय बिमला रावर जी,
नमस्कार!
अत्र कुशलम तत्रास्तु।

आपकी रचनाएं प्राप्त हुईं। प्रथम दृष्ट्या आपकी रचनाएं इतनी सशक्त हैं कि उससे बारहदरी अनमोल बन जाएगी। आपकी पुस्तक 'अनुभव' भी प्राप्त हुई। कौन-सी कविता की प्रशंसा करूँ, यह समझ नहीं पा रहा हूँ, पहली कविता का तीसरा पैरा एक विशेष प्रभाव छोड़ता है-

अर्थहीन हो गए शब्द सब, बुद्धि चेतनाहीन हो गई
अंतरतम तक जर्जर मानव, भावनाओं की मौत हो गई

पढ़ता चला जा रहा हूँ, बढ़ता चला जा रहा हूँ। 'इंसान भगवान बन जाए' तथा 'चेहरा और दिल' दर्पण की तरह से स्पष्ट हैं। 'यादों की ओढ़न' मे। आपने जीवन दर्शन का वर्णन किया है, निम्नलिखित तीन लाइन हृदय को छूती हैं-

तेरी यादों को गीतों में रंग कर
मैंने अगले जनम में मिलन के लिए
कुछ तार पिरो लिए हैं।

आपकी गद्यात्मक कविता सुबह का इंतजार करो की निम्नलिखित लाइनें प्रभावशाली हैं-

शाम होने के बाद सुबह भी आएगी
इंतजार करो इन दोनों के बीच
सपनों से भरी रात भी आएगी।

हृदय का सत्य एक बहुत सुंदर विचार है। आपने जो बच्चों के नाम वसीयत लिखी है, वह बहुत अच्छा है। इस कविता के निम्नलिखित अंतिम लाइनें मुझे बहुत अच्छी लगीं -

असुखद अनचाहे क्षणों को भूल जाना
स्नेह के भीगे क्षणों को याद करके मुस्कुराना
बस तुम्हारे प्यार श्रद्धा जो हमें अर्पण करोगे
सही अर्थों में वही सबसे बड़ा तर्पण करोगे।

पृष्ठ 28 पर अंकित 'ज़िन्दगी और समझौते' एक वास्तविकता है। इसकी एक-एक लाइन प्रभावित करती है, विशेष रुप से निम्नलिखित पंक्तियाँ-

हमने अपनी हर इच्छा
कतर कतर कर छाँट दी
पूरी ज़िन्दगी समझौतों में काट दी
ज़िन्दगी कितने टुकड़ों में बाँट दी।

कुछ सपने, बदल दो रुख हवाओं के, पुराने ज़माने, खुला दरवाजा तथा निरंतर संघर्ष अच्छी कविताएं हैं। आपकी कविता 'कोई नहीं आएगा'। इसकी यह पंक्तियाँ-

अपनी राहो।को तुम्हें
ख़ुद ही सजाना होगा
कोई मंजिल तक पहुँचाने नहीं आएगा
अपनी आंखों को रखना सदा खोलकर
कोई रौशनी दिखाने नहीं आएगा।

'असंभव नहीं' कविता मे। आपने यथार्थ लिखा है कि-

मंजिलों के रास्ते कठिन तो होते हैं पर असंभव नहीं।

'इच्छाओं का आकाश' कविता भी ह्रदय पर गहरी छाप छोड़ती है। 'यादों का जंगल' सच्चाई पर आधारित है। 'बस एक बार आओ' का आरंभ बहुत अच्छा है, और अंतिम पंक्तियां अमिट छाप छोड़ती हैं -

कह नहीं सकते
तो तुष्टि नहीं तृषा बन कर आओ
प्रेम नहीं दे सकते तो घृणा दे जाओ
पर एक बार आओ, बस एक बार आओ।

'अपना-अपना आकाश' भी प्रभावशाली कविता है, 'परिचय और अपरिचय' ऐसा लगता है जैसे अपना संपूर्ण अनुभव आपने इसमें उतार

दिया है। और 'अपनी पहचान' में आपने जो साहस का परिचय दिया है, वह अद्‌भुत है।

मुझे मेरी अस्तित्वहीनता का
मेरी व्यक्तित्वहीनता का
बोध कराने के लिए तुम्हारा धन्यवाद
किंतु तुमने, कैसे मुझे एक लावारिस लाश समझ लिया
मैं भी उस परमात्मा की ही एक कृति हूँ
जिसने यह सृष्टि रची है।

'मेरी पहचान' में आपने शायद अपनेपन को रेखांकित किया है। 'किस सुख की आशा' में आप की कविताएँ एक संदेश की मानिंद हैं। आरंभ से ही यह कविता प्रभावित करती है। इसकी चार लाइनों में ही सारा भाव निहित है-

बीते हुए कल
और आने वाले कल की चिंता में
हम अपना आज क्यों भूल रहे हैं,
क्यों वर्तमान को बिगाड़ रहे हैं

'जाना कहाँ है' में एक संदेश है। सभी कविताएं अतुकांत और गद्यात्मक हैं किन्तु यह कविता काव्यात्मकता लिए हुए है। इसी प्रकार 'कराहट' में भी काव्यात्मकता है।

तुम को खोकर ज़िन्दगी तो ज़िन्दगी लगती नहीं
एक भी लौ आस की अब तो कभी जगती नहीं।

इसी प्रकार 'आशादीप' में भी काव्यात्मकता अपने संपूर्ण भाव के साथ प्रकट हुई है। मुझे यह चार लाइन बहुत अच्छी लगीं -

न निराशा की गहराइयां ही डसें
कष्ट पीड़ायें डर कर के मुँह फेर लें
पग जो आगे बढ़े वह रुके न कभी
चाहे बादल घने से घने घेर लें।

'उत्छृंखल बूँद' नामक रचना आदरणीया महादेवी वर्मा की याद दिलाती है। 'बचपन' में आपने अपनी पोती का चित्र खींच दिया है। बहुत अच्छा लगा। 'बुढ़ापा', 'खून के आँसू', 'अनदेखी मौत' सभी अच्छी

रचनाएं हैं, 'वोट की राजनीति' भी वर्तमान राजनीति को स्पष्ट करती है। अंतिम कविता में संभवतः आपने मेरे मन की बात लिखी है। प्रथम पंक्तियां प्रभावशाली होने के साथ-साथ गहराई में उतरने की क्षमता रखती हैं।

तुम्हारी स्मृति की चुनर जब मुझे
अपने साए तले ढक लेती है तब मैं
दुनिया के सारे दुख दर्द भूल कर
एक नई दुनिया में खो जाती हूँ
मेरे दिन और रात तुम्हारी यादों से महक जाते हैं।

शेष कुशल।

आपका शुभचिंतक
हितेश कुमार शर्मा

अनुभव रूपी जीवन सरिता के अनमोल मोती

बिमला रावर सक्सेना महज एक कवियत्री नहीं है, बल्कि उनकी कविताओं को पढ़ने के बाद यह महसूस होता है कि उनकी कविताओं में उन्होने जीये हुए जीवन की, और उस जीवन से उपजे भावों के चुने हुए मोतियों को, शब्दों के रूप में ढ़ालकर, पुस्तक रूपी माला में पिरोने का प्रयास किया है।

कविता में करुणा का होना एक आवश्यक तत्व है। बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं मे। मनुष्य जीवन के प्रति करुणा के भाव का सहज ही दर्शन होता है। कविता भावों को व्यक्त करने का एक माध्यम है, और सीमित शब्दों में जीवन की बड़ी से बड़ी घटनाओं को कविता के रूप में अभिव्यक्त करने का यह महती प्रयास किया गया है। बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं को आँखो के द्वारा पढ़ने के बजाय, मन और अनुभूति की दृष्टि से देखना चाहिए, तभी इनका सम्पूर्ण आनंद लिया जा सकता है और शब्दों की गहराई को समझा जा सकता है।

जीवन के आठवे दशक में उन्होंने अपनी यादों के झरोखों से इन कविताओं को निकालकर हम पाठकों के लिए सुलभ कराया है। कई बार ऐसा भी हो सकता है कि पाठक इन कविताओं पर निजी होने का ठप्पा लगाने की कोशिश करें, लेकिन उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि मनुष्य का जीवन लगभग एक जैसा ही होता है। कविताओं के बीच में अपना या पराया जैसी चीज नहीं होती, और अनुभूति तो साझा ही होती है, भले ही उसके अनुभव अलग-अलग हों, जीवन के दुख और सुख की तरह।

बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं को जब मैंने अपने आप को उनकी जगह रख कर सोचा, तब यह सारी कविताएं मुझे अपनी जैसी लगीं। मैंने इन कविताओं को लगभग अठारह साल पूर्व भी पढ़ा था, और अब एक बार फिर से इन्हे। पढ़ने का मौका मिला, जब इन कविताओं को नए रूप में एक नई किताब बनाकर पाठकों के सामने पेश किया जा रहा है।

'मानवता की मृत्यु' कविता के एक अंश मे। आपने लिखा है-

अर्थहीन हो गए शब्द सब
बुद्धि चेतनाहीन हो गई
अंतरतम तक जर्जर मानव
भावनाओं की मौत हो गई।

वर्तमान समय का यदि आँकलन किया जाए, तो हम इन पंक्तियों को जीवन का कटु यथार्थ कह सकते हैं। इसी कविता की यह चार पंक्तियाँ भी गौर करने लायक है-

जीवन चक्र चल रहा फिर भी
हृदयहीन मानव की माया
सब चलती फिरती लाशें हैं
नहीं साथ है अपना साया।

हम चाहकर भी जीवन के इस रूप को नकार नहीं सकते। भले ही आज के जमाने में हमारे पास अकूत धन और संपत्ति हो सकती है, लेकिन हमने अपना सबसे बड़ा सुकून जो हमारे रिश्ते हैं, और उन रिश्तो में निहित मानवीयता है, उसको भुला दिया है। और इसके कारण ही हमारे जीवन में असंतोष और अतृप्ति की भावना है। अगर जीवन में हम एक-दूसरे का सहारा बनते हैं, और एक-दूसरे के साथ जुड़े होते है। तो अभावों में रहते हुए भी, यह जीवन हमारे वर्तमान जीवन से कहीं बेहतर होता।

हमारे आपसी व्यवहार और सरोकार इतने स्वार्थी हो चुके हैं कि हम दूसरे की जगह बैठकर सोचने की कला को भूल चुके हैं और यही वजह है कि वर्तमान में अब आदमी के व्यवहार के लिए नए मुहावरे गढ़ने पड़ रहे हैं।

मुझे हर चेहरे में से
एक दूसरा चेहरा
झाँकता नजर आता है
हर चेहरा सामने वाले की कीमत
आँकता नजर आता है
कहावत बदल गई लगती है कि
चेहरा दिल का आईना होता है।

यह पंक्तियां हमारे वर्तमान जीवन और हमारे आपसी व्यवहार को

दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं। आपकी एक कविता 'अंतिम पड़ाव' मनुष्य के व्यवहार के कारण वृद्धों के मन में उपजी हुई अनुभूत पीड़ा का वर्णन कराती है-

जीवन के इस अंतिम पड़ाव पर
जहाँ तक आते-जाते
तन और मन टूट चुके हैं
जीवन का सारा रस
अपने लुटेरे, लूट चुके हैं
शून्य के अतिरिक्त
कुछ न रहा शेष है
खंडहर हुए जीवन के
हम भग्नावशेष हैं।

वर्तमान समय में जिस प्रकार से वृद्धाश्रमों की स्थापना की तरफ जोर दिया जा रहा है, वह हमारी टूटती हुई पारिवारिक सामाजिक रिश्तों और संबंधों की डोरियों का प्रतीक है। माँ-बाप के प्रति आज की संतान का बदलता हुआ दृष्टिकोण, इस कविता में साफ-साफ झलकता है।

उनकी एक कविता 'ज़िन्दगी और समझौते' अभिभावकों की नजर से देखने की जरूरत है-

पूरी ज़िन्दगी समझौतों में काट दी
ज़िन्दगी कितने टुकड़ों में बांट दी
कभी इसकी हँसी के लिए
कभी उसकी खुशी के लिए
कभी इसे सँवारने के लिए
कभी उसे बनाने के लिए।

परंतु हर अभिभावक के जीवन का यही सच है कि वे अपने आप को पीछे रखकर हमेशा अपनी औलाद के लिए अच्छा करते हैं, लेकिन क्या उसका बदला हमारे जैसी औलादें उतार भी पाती हैं? वर्तमान समय का यह एक अनुत्तरित यक्ष प्रश्न है।

बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं में जीवन के अनेक रूप और विशेषकर उनका समाज के प्रति जो नजरिया है, और घटनाओं

का जो विश्लेषण वे अपनी कविताओं के रूप में करती हैं, वह इन कविताओं को न सिर्फ़ पठनीय, बल्कि संग्रहणीय बना देता है। उनके अनुभवों और विचारों से आपकी सहमति अपने आप बनती चली जाती है, क्योंकि यह मात्र कवितायें नहीं हैं, बल्कि जीवन का खुरदरा यथार्थ हैं। एक न एक रोज ये कविताएँ आपके जीवन से अपनी स्वीकृति करवा कर ही रहेंगी, यही इन कविताओं की ख़ूबसूरती है, और यही स्वीकृति पाना इनकी परिणति है। आज आप भले ही इन कविताओं को किसी उम्र विशेष में होने के कारण मात्र कविता कहें, लेकिन यही जीवन का सत्य अनुभव है, और इसे स्वीकारने के अतिरिक्त हमारे पास कोई विकल्प भी मौजूद नहीं है।

बिमला रावर सक्सेना जी को मैं अपने हृदयतल से बधाई देता हूँ कि उन्होंने मात्र कविताएं नहीं लिखी हैं, बल्कि जीवन के अनुभव को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। ईश्वर से कामना करता हूँ कि वे जिस प्रकार से अपने एकांत को सक्रिय और सृजनशीलता से ओतप्रोत रखे हुए हैं, वह सदैव बना रहे, ताकि उनके ऐसे ही जीवन से उपजे हुए अनुभव, हमें जीवन के प्रति आशावान, सजग और सतर्क करते रहें, जिससे कि मानवीय जीवन में मानवता, अपनापन, प्रेम और कृतज्ञता का भाव बना रहे।

मैं बड़ी बहिन बिमला रावर सक्सेना जी को इन कविताओं के पुनः प्रकाशन और नए रूप में जीवन के अनुभवों के ''अनुभव'' के रूप में अवतरण पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवतु सब्ब मंगलम।

केदारनाथ 'शब्द मसीहा'

नई दिल्ली

आभार

मेरे प्रथम काव्य संकलन अनुभव के प्रकाशन की परिकल्पना मेरे पुत्र रवि सक्सेना तथा पुत्र वधू पल्लवी सक्सेना ने अक्टूबर 2001 में की थी। मैंने साहित्यिक रुचि वाली अपनी सहयोगी शिक्षिका और अपनी छोटी बहन जैसी राका से बात की। उन्होंने मुझे अपने स्वसुर आदरणीय डॉ. प्रेम सागर जी से मिलवाया। जिनकी पूर्ण सहायता से कविताओं का चयन हुआ तथा उनके लिखें अत्याधिक मर्मस्पर्शी, प्रेरणास्पद और मुझे प्रोत्साहन देने वाली भूमिका के साथ मेरी पांडुलिपि पूर्णतया तैयार हो गई। बेटे के पास सारे कागज पहुँच गए। मार्च 2002 में, 31 मार्च को मैं सेवानिवृत्त हुई। विद्यालय से घर आई तो एक बड़ा-सा पार्सल मिला, जिसमें छुपी थी बेहद सुखद "अनुभूति" से अभिभूत कर देने वाली, आश्चर्यचकित करने वाली मेरी पुस्तक ''अनुभव''..... मेरा प्रथम प्रकाशित काव्य संकलन। हृदय ने पुलकित होकर अपने बच्चों को आशीर्वाद दिया, तथा मान्यवर डॉ. प्रेम सागर जी और प्रिय राका को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद दिया।

कादम्बिनी में भेजी हुई मेरी कविता 'तो मैं भी कवि हूँ' मार्च 2005 के कादम्बिनी के अंक में प्रकाशित हुई, और 10 मार्च 2005 को मेरे जन्म दिवस पर मुझे प्राप्त हुई। मैं कादम्बिनी के प्रथम अंक से उसकी पाठिका रही हूँ, किंतु 10 मार्च 2005 को प्राप्त कादम्बिनी, मेरे लिए बहुत बड़ा पुरस्कार थी। उनमें से कुछ माननीय विद्वान जिनके पत्रें से मुझे प्रेरणा व प्रोत्साहन मिला, मेरी कविताओं को उनके पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य संग्रह में स्थान मिला, उनका हृदयतल से आभार व्यक्त करती हूँ। मैंने अपनी पुस्तक ''अनुभव'' उन्हें भेजी और उनकी प्रतिक्रियाएं ''अनुभव'' के द्वितीय संस्करण में पाठकगण पढ़ेंगे। मैं समस्त पाठकवर्ग की हृदय से आभारी हूँ।

डॉ. गजेंद्र बटोही- ''अनुभव'' से जुड़ा नाता डॉ. गजेंद्र जी से और उनकी स्नेहमयी पत्नी से। बटोही जी ने ''अविचल दृष्टिकोण'' पत्रिका प्रारंभ की और मैं उसके प्रथम अंक से संरक्षकों में शामिल हुई। इस पत्रिका की उच्चस्तर की सामग्री ने बहुत आकर्षित किया।

इस प्रथम अंक में मान्यवर डॉ. पुष्पेंद्व वर्णवाल जी ने मेरी कृति ''अनुभव'' की समालोचना लिखी, उनके दिए साधुवाद को मेरा आभार। डॉ. गजेंद्र जी का बहुत-बहुत आभार।

परम आदरणीय किशोर गांधी जी "अनुभव" की कविताओं पर लिखी उनकी मर्मस्पर्शी प्रतिक्रियाओं के लिए मैं किशोर भैया की हृदयतल से आभारी हूँ। उनके प्रेरणा और प्रोत्साहन से भरे पत्र मुझे समय-समय पर मिलते रहे हैं, और मुझे लिखने को प्रेरित करते रहे हैं।

मान्यवर श्रीमान हितेश कुमार शर्मा ने ''अनुभव'' की प्रत्येक कविता पर हृदयग्राही प्रतिक्रिया लिखी। मैं उनकी करबद्ध धन्यवाद सहित आभारी हूँ।

बच्चों की प्यारी-सी पत्रिका ''बालप्रहरी'' के प्रधान संपादक माननीय उदय किरौला जी ने मेरी रचनाओं को बच्चों तक पहुँचाया। मैं श्रीमान उदय किरौला जी की बेहद आभारी हूँ।

प्रिय छोटे भाई जसवीर सिंह जी ने पुस्तक पढ़ी। मुझे फोन द्वारा सराहना दी, प्रोत्साहन दिया, तथा एक अंतर को बहुत ही स्पर्श करने वाला पत्र ''अनुभव'' की कविताओं के विषय में लिखा। जसवीर सिंह जी रेल विभाग की प्रशासनिक सेवा में उच्च पदाधिकारी हैं। पठन-पाठन, लेखन और समाजसेवा के प्रति भी उतने ही समर्पित हैं, जितने अपने रेल विभाग के प्रति। नम्र और गंभीर व्यक्तित्व वाले जसवीर जी मुझसे 18 वर्ष पूर्व मिले थे, और आज भी उतने ही स्नेह से मिलते हैं। और उनसे बात करके जीवन में कर्म की प्रेरणा मिलती है।

प्रिय बंधु केदारनाथ 'शब्द मसीहा' रेल विभाग में कार्यरत हैं। केदार जी से 18 वर्ष पूर्व फोन पर पहली बार बात हुई, जब उन्होंने मेरी पुस्तक अनुभव पढ़ी, और पढ़ते ही फोन किया। उसके बाद केदार जी के रूप में मुझे एक बंधु, मित्र, छोटा भाई स्नेह और आदर देने वाला एक सहायक, एक पथ प्रदर्शक मिला, और न जाने कब से मैं उनकी दीदी से दीदी माँ बन गई। आज केदारनाथ जी साहित्य जगत में एक प्रतिष्ठित स्थान स्थापित कर चुके हैं, किंतु उनके व्यस्त

जीवन में भी केदारनाथ शब्द मसीहा अपनी दीदी माँ को पूरा समय देते हैं, परामर्श देते हैं, सहायता देते हैं। आभार और धन्यवाद के साथ बहुत-बहुत स्नेह आशीर्वाद।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
नई दिल्ली- 110 018
दूरभाष- 011-2553 3221

अनुक्रम

मानवता की मृत्यु	29	60	समय के साथ
इन्सान भगवान बन जाए	30	61	एक रहस्य
चेहरा और दिल	31	62	असली ख़ुशी
यादों की ओढ़न	32	63	जीने का राज़
सुनहला खजाना	33	64	अनजाने रिश्ते
खुरदरे अहसास	34	65	कोई नही आयेगा
सुबह का इन्तज़ार करो	35	66	रिश्ते और ज़िन्दगी
मरे हुए रिश्ते	36	67	एक कहानी
हृदय का सत्य	37	68	भटकन
एक वसीयत-अपने बच्चों के नाम	38	69	अमृतघट
अंतिम पड़ाव	40	70	दोस्तों के फूल भी
अतीत	41	71	ज़िन्दगी की जंग
गर्व	42	72	असंभव नही
ऋणमुक्त	43	73	सागर और मैं
अटल सत्य	44	75	इच्छाओं का आकाश
सलीब का सच	46	76	मुसीबत
ज़िन्दगी और समझौते	47	77	स्वभाव
धुन छेड़ें	48	78	छोटे-छोटे सपने
कर्तव्य	49	79	नोट और वोट
जीवन का पल-पल	50	80	अपनों के दिये आँसू
कुछ सपने	51	81	यादों के जंगल
बंदल दो रुख़ हवाओं के	52	82	जीवनधारा
पुराने ज़माने	53	83	अनुभव और अनुभूति
मनुहार	55	84	विश्वास
खुला दरवाज़ा	56	85	मंज़िल की राह
अनजाना भय	57	86	अस्तित्व के लिये
निरन्तर संघर्ष	58	87	टूटता सपना
दर्द पुराने	59	88	अंधियारे रास्ते

मैं और प्रकृति	89	122	दर्द और मुस्कान
बेनक़ाब	90	123	ऐसी आवाज़
बस एक बार आओ	91	124	जाग जाओ
दिग्भ्रान्त पथिक	93	125	सहारे
उलझी ज़िन्दगी	94	126	मंज़िलों की राहें
सच और झूठ	95	127	ख़ुशी का ख़जाना
अमृता	96	128	दर्द की चूनर
प्रेरणा	97	129	पूरी मौत
अपना - अपना आकाश	98	130	तुमको खोकर
फिसलता वक़्त	99	131	झूठी आशा
जीवन्मृत्यु	100	132	आशा दीप
किस्मत के रंग	101	133	उच्छृंखल बूँद
चाँद के दाग़	102	134	अन्तिम प्रहर
परिचय और अपरिचय	103	135	स्नेह के कुछ पल-वृद्ध की कामना
अपनी पहचान	104	136	दर्द दिल और मुक्ति
परिक्रमा	106	137	बचपन
एक सितारा	107	138	ध्रुव सत्य
क्षितिज के पार से	108	139	बुढ़ापा
मेरी पहचान	109	140	ख़ून के आँसू
किस सुख की आशा में	111	141	डोर थाम लो
काले साये	112	142	अनदेखी मौत
जाना कहाँ है?	113	143	वोट की राजनीति
दिग्भ्रमित	114	144	उलझती डोर
भग्न प्रतिमा	115	145	नन्हे दिये
किसे निमन्त्रण देते ये सब	116	146	वही पल
वेदना	117		
शून्य	118		
रौशनी लाओ	119		
कराहट	120		
नया प्रभात	121		

मानवता की मृत्यु

आघातों की क्या परिभाषा
नहीं समझ सकता है कोई
अन्तर की परतों की भाषा
क्या पढ़ पाया अब तक कोई

संवेदन या सहानुभूति का
मतलब कुछ भी नहीं रह गया
प्रेम प्रीति अपनापन सारा
दिल से बाहर कहीं बह गया

अर्थहीन हो गए शब्द सब
बुद्धि चेतनाहीन हो गई
अन्तरतम तक जर्जर मानव
भावनाओं की मौत हो गई

जीवनचक्र चल रहा फिर भी
हृदयहीन मानव की माया
सब चलती फिरती लाशें हैं
नहीं साथ है अपना साया

कहाँ गया ईमान धर्म सब
कहाँ आत्मा जाकर सोई
मानवता की मृत्यु देख कर
अम्बर रोया धरती रोई

इन्सान भगवान बन जाए

अगर
इन्सान की पूरी ज़िन्दगी में
एक भी ऐसा इन्सान मिल जाये
जो उसकी ज़िन्दगी की
उलझनों को सँवार दे
चंद लम्हों के लिए ही सही
जीवन में प्रकाश भरकर
उसे सुविचार दे
एक गिरते इन्सान को
सम्बल दे, आधार दे
कुछ अच्छे पलों का
अप्रतिम उपहार दे
पतझड़ के मौसम में
कुसुमित बयार दे
तो ज़िन्दगी बहार बन जाये
और लाखों में एक
वह इन्सान
भगवान बन जाए

चेहरा और दिल

मुझे हर चेहरे में से
एक दूसरा चेहरा
झाँकता नज़र आता है
हर चेहरा सामने वाले की कीमत
आँकता नज़र आता है
कहावत बदल गई लगती है कि
चेहरा दिल का आईना होता है
अब तो चेहरे पर हाँ
और दिल में न होता है
चेहरे पर चिपकी मुस्कान में
आप दिल को पढ़ नहीं सकते
इसी लिए आप
दिल और चेहरे को मिलाकर
एक सुन्दर मूरत
गढ़ नहीं सकते

यादों की ओढ़न

तेरी यादों की ओढ़नी ओढ़ कर
मैंने ज़िन्दगी के चंद बरस
और झेल लिये

तेरी यादों का दामन पकड़कर
मैंने ज़िन्दगी के सारे व्यंग
सह लिये

तेरी यादों की बैसाखी के सहारे ही
मैंने ज़िन्दगी की कठिन राहें
पार कर लीं

तेरी यादों की चाँदनी में नहाकर
मैंने अपने दिन-रात
उजियारे कर लिये

तेरी यादों को गीतों में रंगकर
मैंने अगले जनम में मिलन के लिए
कुछ तार पिरो लिये हैं

तेरी यादों की यह ओढ़न
मेरी हर साँस को थाम लेती है
और
ज़माने की गर्म हवाओं से बचाकर
मुझे ढाँप लेती है

सुनहला ख़जाना

मेरे सामने अनन्त जलराशि
बिखरी पड़ी है
और ऊपर एक स्वच्छ नीला आकाश
एकाएक उस निर्मल, निरभ्र आकाश में
लाल रंग बिखर जाता है
उस लाल रंग में घुला सारा स्वर्ण
मेरे सामने फैली
नीली जलराशि में कूद पड़ता है
और हर लहर में घुल-घुलकर
भाँति-भाँति के आभूषणों का
रूप धारण कर लेता है
ऊपर नीचे सब कुछ स्वर्णिम
ऊपर नीचे सब कुछ अरुणिम
हर लहर
हर तरंग
नृत्य करती, गाती, गुनगुनाती
उस स्वर्ण को
अपने आँचल में समेटे ले रही है
और मैं?
कभी ऊपर, कभी नीचे देखती
सामने बिखरे सारे सागर को
उसके सम्पूर्ण
सुनहले, रुपहले
अरुणिम, स्वर्णिम ख़जाने सहित
अपनी आँखों के रास्ते
संचित कर
अपने हृदय की
गहनतम गहराइयों में
छुपा लेने की कोशिश में
व्यस्त हूँ

खुरदरे अहसास

मैने अपनी ज़िन्दगी को
अपने लिये कब जिया
मैंने ख़ुद के लिये
ख़ुद को कब पाया
शायद कभी नहीं
शैशव से बुढ़ापे तक
मैंने अपने आपको
ख़ुशफ़हमियों की
मखमली छाया में लपेटे रखा
आँखे बंद करके
खुद को अपने आप में समेटे रखा
आज अचानक
मेरे कुछ उच्छृंखल, उद्दंड
और खुरदरे अहसास
जाग उठे हैं
जो बार-बार मुझसे पूछ रहे हैं
क्यों तूने सारी ज़िन्दगी
हमें हज़ार परतों के पीछे
छिपाकर रखा
हमें बताओ
कब तुमने हमें जिया
सबको ख़ुश रखने की कोशिश में
क्या तुम किसी को ख़ुश रख सकीं
यह ज़िन्दगी
जो सिर्फ़ तुम्हारी थी
उसे तुमने
सिर्फ़ दूसरों पर क्यों लुटा दिया

सुबह का इन्तज़ार करो

शाम होने के बाद
सुबह भी आयेगी
इन्तज़ार करो।
इन दोनों के बीच
सपनों से भरी
रात भी आयेगी
सुनहरे सपनों में
सुबह की उम्मीदें दिखायेगी
सपनों में ही सही
सुबह का इन्तज़ार करो।
घिर-घिर आयेंगी
काली घटायें
टप-टप टपकेगा
छप्पर से पानी
नींद और ख़्वाब
दोनों उड़ जायेंगे
लगेगा रात है
लम्बी और काली
फिर भी
आयेगी जरूर
रंग भरी सुबह
लेकर सूरज की
स्वर्णमयी किरणें
बिखर जायेगा
घर-भर में सोना
शुरू होगा एक नया संघर्ष
जीवन फिर शुरू हो जायेगा
सुबह का इन्तज़ार करो।

मरे हुए रिश्ते

मरे हुए रिश्तों की
अनचाही यादों को
ढ़ोते हुए
कट गई ज़िन्दगी की
लम्बी राहें
इन रिश्तों से जुड़ी
टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों पर
चलते-चलते
लहूलुहान हो गए
दिल और दिमाग़
फिर भी हम न तलाश सके
मरने की कोई राह
न कर सके ज़िन्दगी से निबाह
इन यादों को तो
दिल में सहेज कर रखना ही है
यही तो वो रिश्ते हैं
जिन्हें हम याद करके ख़ुश नहीं हैं
न भुलाकर रह सकते हैं
इन रिश्तों से मिले विष को
हम जितना पीते हैं
वह उतना ही अमृत बनकर
हमें ज़िन्दा रखता है
क्योंकि हमें अभी और
बहुत कुछ सहना है
यूँ ही दिन गुजरते जायेंगे
फिर एक दिन
इन मरे हुए रिश्तो की लाशों के साथ
चलते-चलते हम भी
लाश बन जायेंगे

ह्दय का सत्य

मत सुनो कोई तुम्हें क्या कह रहा
सिर्फ़ यह देखो कि तुमने क्या किया
यूँ तो कुदरत ने बनाया इस तरह इन्सान को
हो बड़ाई या बुराई फिक्र है इन्सान को
किन्तु तुम थोड़ा ह्दय को थाम लो
क्या है अच्छा क्या बुरा पहचान लो
दूसरों की बात को सुन लो मगर
सत्य अपने ही ह्दय से जान लो
प्रश्न तुमसे बहुत पूछे जायेंगे
ऐसे प्रश्नों से न घबराना कभी
जब स्वयं को तुम न उत्तर दे सको
बन्धु मेरे तुम तो शरमाना तभी
तुम को ख़ुद पर और अपने काम पर विश्वास हो
तुम को अपने काम में ही भक्ति का आभास हो
काम में तुम हदय मस्तक आत्मा को दो लगा
और अपनी इच्छाशक्ति को करो तुम दृढ़ ज़रा
फिर रहो तैयार जो भी फल मिते इस काम का
तुम करो न फल की चिन्ता नाम लो बस राम का

एक वसीयत-अपने बच्चों के नाम

कभी जब ज़िन्दगी के मोड़ पर
छूटेंगे कुछ अपने
तुम्हें महसूस होगा
हाय रे! टूटे सभी सपने
मगर यह तो तुम्हारी
एक भारी भूल होगी
किसी को याद कुछ दिन के लिये तो
शूल होगी
फिर कहीं अदृश्य से
आयेगा इक अनजान साया
फिर तुम्हारी स्मृति पर
फैलायेगा विस्मृति की माया
फ़िर तुम्हारे दर्द के अहसास का
वह बोझ कुछ कम होने लगेगा
फिर तुम्हारा ग़म से धुँधला पथ
जरा रौशन लगेगा
तुम अपनी ताकतों को
एक करके
सीख लेना ज़िन्दगी के
कुछ तरीके
तुम कभी संघर्ष से घबरा न जाना

तुम कभी अपकर्ष से चकरा न जाना
न कभी उत्कर्ष पर अभिमान करना
तुम कभी आकर्षणों में
न उलझना
जब कभी अपनों की यादें
आ सतायें
याद करना साथ में जो
पल बिताए
असुखद अनचाहे क्षणों को
भूल जाना
स्नेह के भीगे क्षणों को
याद करके मुस्कुराना
बस तुम्हारे प्यार श्रद्धा
जो हमें अर्पण करोगे
सही अर्थों में वही
सबसे बड़ा तर्पण करोगे

अंतिम पड़ाव

जीवन के इस अन्तिम पड़ाव पर
जहाँ तक आते-आते
तन और मन टूट चुके हैं
जीवन का सारा रस
अपने लुटेरे लूट चुके हैं
शून्य के अतिरिक्त
कुछ न रहा शेष है
खंडहर हुए जीवन के
हम भग्नावशेष हैं
अब तो खुद पर भी
विश्वास नहीं
कुछ नया होगा
कुछ अच्छा होगा
इसकी भी आस नहीं
यह कैसा शून्य है
यह कैसी लक्ष्यहीनता है
मात्र घुटन और विक्षोभ के
सब कुछ अदृश्य है
न कोई अनुभूति
न कोई अहसास
न कोई परिचित
न अपना कोई परिचय है
इस गहराते शून्य में
कौन देगा
दो मधुर शब्द दो अमूल्य क्षण
जो भर दें इन प्राणों में
सुखमय अमृतधन

अतीत

भविष्य की
अनजान राहों पर
चलते-चलते
क्यों दृष्टि मुड़ जाती है
उन्हीं पुरानी राहों पर
जानी पहचानी
पगडण्डियों पर
यादें चित्र बनकर
सामने आ जाती हैं
साँसे संगीत बन जाती हैं
फिर वही
पुराने गीत गाती हैं
क्यों बिछड़े साथी
सपनों में आ-आकर
रुलाते हैं
तो कभी
प्यारसे थपकियाँ दे
सुलाते हैं
जब नींद खुलती है
तो फिर
भविष्य और अतीत की राहें
अपनी-अपनी तरफ
खींचती हैं
बुलाती हैं,
हृदय
न सोता है न जागता है
कदम आगे बढ़ते हैं
मन पीछे भागता है

गर्व

मैं जानती हूँ
मेरी यह ज़िन्दगी
सिर्फ़ एक दर्द है
सिर्फ़ एक चक्र है
जो घूम रहा है
एक नुकीली कील पर
पग-पग पर
मेरी हर अनुभूति की
हर इच्छा की
होती है अग्नि परीक्षा
आती जाती साँसें
लगती हैं भिक्षा
मेरा आकाश छिनता है
धरती हिलाई जाती है
दिन का चैन लुटता है
रातों की नींद चुराई जाती है
मेरे अहसास खो चुके हैं
मेरे जज़्बात सो चुके हैं
लेकिन
मैं फिर भी ज़िन्दा हूँ
और एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व हूँ
जिसे अपने इन्सान होने पर
गर्व है
अपनी ज़िन्दगी पर
नाज़ है
चाहे यह ज़िन्दगी
कितनी ही बेचारी है
कितनी ही दर्द भरी है

ऋणमुक्त

बन्धु मेरे
एक दिन यकायक
तुमसे साक्षात्कार हुआ
मन ने कुछ
अभूतपूर्व सी
अनुभूति के साथ
अन्तर में
कुछ स्वीकार किया
कुछ दिन हम साथ-साथ चले
मन की बहुत सी परतें खुली
दो हृदयों में
एक-सी अनुगूँज हुई
एक लहर सी उठी चुलबुली
बहुत से वायदे
बहुत सी कसमें
ज़िन्दगी भर साथ
निभाने की रस्में
फिर न जाने
कब, क्यों और कैसे
हम नदी के दो पाट हो गये
सब ख़त्म हो गया
रह गई सिर्फ़
तुम्हारी यादों की धरोहर
क्यों तुम यह ऋण
छोड़ गए मेरे माथे पर
एक बार
बस एक बार आओ
ले जाओ अपनी
यादों की धरोहर
और मुझे
ऋणमुक्त कर जाओ!

अटल सत्य

सुख और दुख
मानव जीवन के दो अटल सत्य
दोनों का चक्र ही जीवन मानव का
दोनों के चक्र के बीच बीतता
जीवन मानव का
सुख आता है
ख़ुशी होती है
दिन सुनहरा
और रात रूपहली होती है
पर इस सुख में
इतना न चिपक जाओ
कि जब यह
किसी दूसरी मंज़िल की तलाश में
तुम्हें छोड़कर जाने लगें
तो तुम्हारे पंख
उस सुख में चिपककर
अपनी जान गँवाने लगें
सँभाल कर रखो अपने पंख
न चुभने दो इनमें
किसी भँवरे के डंक
सुख तो भँवरा है
आया
गया
और चला गया
चूम लो उस जाते सुख को

सहेज लो मीठे सुख की यादें
बाँध लो उसको
आस की डोरी से
उनके सहारे सामना करो
आने वाले दुखों का
सुखों की जो डोरी तुम्हारे हाथ में है
एक बार फिर खींच कर लायेगी
सुखभरे दिन
और सुख-दुख का यह क्रम
यह चक्र
चलता रहेगा निरन्तर

सलीब का सच

हमने अपनी ज़िन्दगी को
कुछ ग़ैर ज़रूरी चीजें बेच दी हैं
बहुत दिन तक बचा-बचा कर रखी थीं
बड़ी अदा से सजा-सजा कर रखी थीं
लेकिन एक दिन अचानक
हमें दिव्यदृष्टि मिली
और हमें एक नई दुनिया
एक नई सृष्टि मिली
हमने अपने को दुनिया के साथ चलाने के लिए
लोगों के क़दम से अपने क़दम मिलाने के लिए
उन पुरानी सड़ी-गली चीज़ों को
बेचने का फैसला कर लिया
और धीरे-धीरे मन को पक्का करके
उन्हे बेचना शुरू कर दिया
अरे! हमारे पास था ही क्या ?
चंद पाले हुए उसूल
थोड़ा-सा अच्छा व्यवहार
चरित्र नाम की चीज़
जिसे हम समझते थे
ईश्वर का उपहार
इन्हीं को छोड़कर
बसाया एक नया संसार
ऊँची-ऊँची नैतिकता की रूढ़िवादी बातें
आज याद कर-कर के हम मुस्कुराते हैं
और एक दिन हमने सबको बेच डाला
अपनी ग़रीबी को रातों-रात अमीरी में बदल डाला
पर पुरानी यादें आसानी से नहीं जाती हैं
रह-रहकर कभी दिन में कभी रात में सताती हैं
कहीं हम ख़ुद ही सलीब पर तो नहीं चढ़ गए
कहीं अमीर बनने के चक्कर में
और ग़रीबी की तरफ़ तो नही बढ़ गए।

ज़िन्दगी और समझौते

पूरी ज़िन्दगी समझौतों में काट दी
ज़िन्दगी कितने टुकड़ों में बाँट दी
कभी इसकी हँसी के लिये
कभी उसकी ख़ुशी के लिये
कभी इसे सँवारने के लिये
कभी उसे बनाने के लिये

कभी रूठों को मनाने के लिये
कभी झूठों को सिखाने के लिये
कभी दुखों को भुलाने के लिये
कभी अरमानों को सुलाने के लिये

कभी बड़ों के आदर के लिये
कभी छोटों के प्यार के लिये
कभी अपनों के सहारे के लिये
कभी स्नेह के दो पलों के उधार के लिये

कभी दिन के चैन के लिये
कभी सुखभरी रैन के लिये
कभी दो मीठी बातों के लिये
कभी दिल में लगे आघातों के लिये

हमने अपनी हर इच्छा
कतर-कतरकर छाँट दी
पूरी ज़िन्दगी समझौतों मे काट दी
ज़िन्दगी कितने टुकड़ों में बाँट दी

धुन छेड़े

अंधेरे घनेरे बहुत छा रहे हैं
काश! मिल जाये कहीं से
थोड़ी-सी रौशनी
साँसों का चलना ही जीना कहलाता है
साँसों का चलना ही मन को बहलाता है
जीने के चक्र में पिसे जा रहे हैं
काश! मिल जाये कहीं से
थोड़ी-सी ज़िन्दगी
नफ़रत के सैलाब झेले बहुत हैं
अपनों में पराये देखे बहुत हैं
रो कर पुकारे दिल किसी एक अपने को
काश मिल जाये कहीं से
थोड़ा सा प्यार ही
धिरे आ रहे हैं निराशा के बादल
ये तन और मन आज दोनों हैं घायल
हृदय ढूँढता है सहारा किसी का
काश! मिल जाये कहीं से
थोड़ी-सी आस ही
प्यासा है ये दिल अपनों के स्नेह का
जल जाये दीप कोई अपनों के नेह का
मुक्ति मिले जीवन की प्यासी इच्छाओं से
काश! कोई धुन छेड़े
जीवन संगीत की

कर्तव्य

स्वप्न और सत्य में
बहुत अन्तर होता है
सोने और जागने की प्रक्रिया में
एक बार पूरा संसार बदल जाता है
रात जब मैं सोई थी
सपनों में खोई थी
उन सुनहरे सपनों में
मैं घूम आई जग सारा
घाटी, पहाड़, सागर का किनारा
फूलों से भरे वन-उपवन
कलकल करती नदियाँ
ढोलक की थाप पर
नाचती किन्नरियाँ
सब तन्मय
सब चिन्मय
ऐसा अनुभव हुआ
जैसे जीवन केवल संगीत है
जीवन केवल सौन्दर्य है
फिर
एकाएक आँख खुल गई
स्वप्न भंग हो गया
रह गई केवल एक अनुभूति
एक सत्य
एक वास्तविकता
जीवन नहीं है सौन्दर्य
जीवन है केवल कर्तव्य

जीवन का पल-पल

बंद कर लूँ मुट्ठियों में
आकाश की ऊँचाइयों को
सागर की गहराइयों को
जंगल की अमराइयों को

धरती के प्राँगण को
सागर के नर्तन को
बादल के गर्जन को

रातों के सन्नाटों को
अजनबी आहटों को
जीने की चाहतों को

शिशु की मुस्कान को
भ्रमर की गुँजन को
गीतों की तान को

कँटीले वनों को
धरती के कणों को
पिघलते क्षणों को

मूसलाधार वृष्टि को
प्रकृति की दृष्टि को
समग्र सृष्टि को

नदिया की कलकल को
पृथ्वी की हलचल को
जीवन के पलपल को

कुछ सपने

आओ चलो!
कुछ सपने खरीद लायें
रोज़ दिल टूटते हैं
कुछ बिछड़ते हैं
कुछ घुटते हैं
दुनिया के मेले में
सबके अपने-अपने दुख हैं
किसी से पराये
किसी से अपने रूठते हैं
जाने क्यों और कैसे
अपने ही
अपनों को लूटते हैं
दिल दुखी होता है
क्या करें?
कहाँ जायें?
ऐसे में चलो!
कुछ सपने खरीद लायें
सपने में अपने
रूठों को मनायेंगे
भूल गये जो हमको
उन को बुलायेंगे
शायद दिल को कुछ सुकून मिले
भूल जायें शिक़वे गिले
शायद मिल जायें खुशियों के ख़जाने
अपने बन जायें कोई अनजाने
रूठ गई जो हमसे
मिल जाये वो हँसी
सपने में ही सही
मिल जाये थोड़ी-सी ज़िन्दगी
अपने पराये जिन सपनों में आयें
आओ चलो!
कुछ सपने खरीद लायें

बदल दो रुख़ हवाओं के

बहुत चलना अभी है
रास्ते बेहद भयावह हैं
समय रहते बदल दो
रुख़ हवाओं के
चलें कितनी हवायें
पर नहीं जड़ से उखड़ना तुम
जमा लो पाँव धरती पर
न मंज़िल से बहकना तुम
न पड़ना तुम कभी कमज़ोर
अपनी राह चलना तुम
जड़ें कितने ही काटें
पर न विचलित पथ से होना तुम
कहीं तुम न बदल जाना
बहुत करना अभी है शेष
समय रहते बदल दो रुख़ हवाओं के
हवायें तुमको ले जायें
कहीं ऐसा न हो जाये
बदलती तुमको है दुनिया
कहीं न लक्ष्य खो जाये
जड़ों से टूट कर
कोई नहीं फलफूल सकता है
जड़ों को भूल कर इन्सान
ख़ुद को भूल सकता है
कोई झोंका कहीं आकर
न तुमको साथ ले जाये
समय रहते बदल दो
रुख़ हवाओं के

पुराने ज़माने

गई रात जगते रहे
देर तक हम
पुराने तराने बहुत याद आये
कहीं दर्द दिल में
उठा था अचानक
पुराने ज़माने बहुत याद आये
वो बचपन की सखियाँ
वो सखियों के झुरमुट
इशारों में बातें
इशारों में गिटपिट
वो गलियों की सखियाँ
वो सखियों की गलियाँ
न बाहर थी उनके
कोई और दुनिया
वो सावन के मेले
वो मेले के झूले
वो चाट और पकौड़ी
अभी तक न भूले
वो तीजों के गाने
जो गाये थे मिलकर
नहीं आज तक वो
गए हैं भुलाये
हरी लाल इमली
वो चूरन की गोली
वो कमरख करौंदे
वो सखियों की टोली
सभी साथ चटखारे

ले ले के खातीं
सभी साथ हँस-हँस के
सबको हँसाती
ढले शाम जब
खेलने को निकलते
तो बस भूल जाते थे
हम घर के रास्ते
लगाती थी आवाज़ माँ
आ जा बिटिया
गरम दाल रोटी तो
खा आके बिटिया
बड़ी रात तक दादा
हमको जगाते
वो राजा की परियों की
गाथा सुनाते
वो बचपन के दिन भी
बड़े थे अनोखे
सरल ज़िन्दगी थी
न थे कोई धोख़े
न जाने अचानक
वो बचपन गया कब
वो दिन जो
कभी लौट कर फिर न आये
कहीं दर्द दिल में
उठा था अचानक
पुराने ज़माने
बहुत यादे आए

मनुहार

आओ बना लें एक दरवाज़ा
इस दीवार में
आओ बसा लें
प्यार की खुशबू
संसार में
पल में टूट जाते हैं
बरसों के रिश्ते
बरसों तक रहते हैं
जख्म यूँ ही रिसते
दिलों के बीच गहरी
खाई खुद जाती है
दिलों के बीच ऊँची
दीवारें उठ जाती हैं
तड़पते हैं दिल
पर झुकता नहीं कोई
पास से गुज़रते हैं
पर रुकता नहीं कोई
तरसती है जीभ
कुछ पूछने को
कुछ बताने को
तरसते हैं कान
कुछ सुनने को
कुछ सुनाने को
प्यार से मना लें
रूठे हुए अपनों को
फूलों से सजा लें
उजड़े हुए सपनों को
आओं कुछ जतन करें
जन्नत है मनुहार में
आओ बना ले एक दरवाज़ा
इस दीवार में

खुला दरवाज़ा

हर बंद दरवाज़े के पीछे
छिपा होता है
एक खुला दरवाज़ा
जब लक्ष्य तक पहुँचने के
सारे मार्ग बंद हो जाते हैं
जब लगता है
अब चारों ओर
केवल शून्य है
तब कहीं से एक
सम्मोहित करती
आवाज़ आती है
रुक मत
तूने मुझ तक पहुँचने की
इच्छा की
मैं ही तेरा लक्ष्य हूँ
आ
मेरे पास आ जा
जब बंद हो जाता है
एक दरवाज़ा
तब खुल जाते हैं
कई दरवाज़े
इसी तरह निरन्तर
चलता रहता है
यह संसार

अनजाना भय!

दोस्त मेरे दर्द की कोई दवा दे दो
नहीं तो ज़िन्दगी का अंत हो जाये
कुछ ऐसी ही दुआ दे दो
नहीं टुकड़ों में बँट-बँटकर
जिया जाता है अब मुझसे
नहीं दुखड़ों से डर-डरकर
रहा जाता है अब मुझसे
मुखौटों पर मुखौटे देखती हूँ
जब मैं दुनिया के
तो इक अनजान-सा भय
घेर लेता मन को है मेरे
ये अपने और पराये की
करुँ पहचान मैं कैसे
कोई कहता है क्या
करता है क्या
यह जान लूँ कैसे
मेरी दुनिया तो बिल्कुल स्वच्छ है
और पारदर्शी है
मैं ऐसी झूठी चालों को
कहो पहचान लूँ कैसे
जो मुँह में राम कहकर
पीठ पर छुरियाँ चलाते हैं
में उनकी वास्तविकता को
भला पहचान लूँ कैसे
न सोचूं मैं ये सब बातें
न जानूँ असलियत सबकी
रहूँ अनजान मैं सबसे
यही शायद दवा मेरी
उड़ें दुख-दर्द सब दिल के
कुछ ऐसी ही हवा दे दो
नही तो ज़िन्दगी का अंत हो जाये
कुछ ऐसी ही दुआ दे दो

निरन्तर संघर्ष

जीवन एक निरन्तर संघर्ष है
यही जीवन का निष्कर्ष है
जीवनचक्र कब कहाँ अटक जाये
मंज़िल की राह में
कौन कब कहाँ भटक जाये
जीवन के सुनहरे स्वप्न
ताश के महल से ढह जायें
जीवन नैया की पतवार टूट जाये
क्षणभर में
मौत की लहराती लहरों में बह जाये
अपने बेगाने बन जायें
या कभी किसी अनजाने पथ पर
कोई अपरिचय परिचय में बदल जाये
दिग्भ्रान्त पथिक को
एक नई दिशा दे जाये
एक बार फिर
मृत्यु को पुकारता मन
जीने के निश्चय में बदल जाये
जीवनभर यह उतार-चढ़ाव
आते हैं
जाते हैं
कभी रुलाते हैं
कभी हँसाते हैं
कभी उत्कर्ष है
कभी अपकर्ष है
जीवन एक निरन्तर संघर्ष है

दर्द पुराने

बहुत चाहा कि एक बार
आ जायें वो गुजरे ज़माने
पलभर को आ जायें
वो वक़्त पुराने
लेकिन टटोलें जब भी
यादों के ख़जाने
हाथ सिर्फ़ आये
कुछ दर्द पुराने
क़तरा-क़तरा ज़िन्दगी
यूँ ही कटती गई
लम्हा-लम्हा यादों पर
धूल-सी जमती गई
चाहा करुँ साफ़
धुँधलाई यादों का आईना
पर दिखता हर अक़्स
उसमें बेग़ाना
धूल की एक परत
और जम जाती है
दर्द की एक लहर
और दौड़ जाती है
अन्दर तक रूह भी
और सहम जाती है
आँखों में थोड़ी-सी
नमी छोड़ जाती है
जब भी चाहती हूँ
साफ़ करूँ
यादों के आईने
याद फिर आ जाते हैं
वही दर्द पुराने

समय के साथ

समय के साथ
सन्दर्भ बदल जाते हैं
परिभाषायें बदल जाती हैं
आशायें बदल जाती हैं
समय के साथ
आदर्श बदल जाते हैं
लक्ष्य बदल जाते हैं
दिशायें बदल जाती हैं
दिल बदल जाते है
नज़र बदल जाती है
जो अमृत थी बात कभी
ज़हर बन जाती है
समय के चक्र में
पराये अपने
और अपने, पराये हो जाते हैं
न जाने किस-किस की याद में
कितने आँसू बहाये जाते हैं
समय का चक्र कितना अजीब है
पल में कोई दूर, कोई करीब है
पल में कोई अमीर, कोई ग़रीब है
पल-पल में बजता है, एक नया राग
पल में कोई सोया, कोई गया जाग
जीवन और मृत्यु का
पलभर का नाता है
पल में कोई आता है
पल में कोई जाता है

एक रहस्य

ऐ! मेरी ज़िन्दगी
मुझे नहीं पता
कब, कहाँ और कैसे
हम मिले
मेरे लिये यह भी
एक रहस्य है
कैसे मुझे
तुमसे इतना प्यार हो गया
तुम कैसी हो
मैं नहीं जानती
तुम कैसी दिखती हो
मैं नहीं पहचानती
फिर भी
मैं यही दावा करती हूँ
कि तुम मेरी हो
सिर्फ़ मेरी
हाँ,
यह सच भी मैं जानती हूँ
एक दिन आयेगा
जब तुम, मुझे छोड़कर
कहीं दूर चली जाओगी
और मैं
अपने प्यार द्वारा ही
छली जाऊँगी

असली ख़ुशी

बन्धु मेरे!
अहंकार और अभिमान के पर्दे
जो तुमने अपनी आँखों पर चढ़ा रखे हैं
जिनके पीछे छिपकर
तुम्हारी आँखे अन्धी हो चुकी हैं
जिन्होंने तुम्हारी बुद्धि को
कालीरात-सा अँधियारा बना दिया है
जिनके नशे में गुम हो चुकी है
अपने पराये की पहचान
तुम हो चुके हो ख़ुद से भी अनजान
इससे पहले कि ये पर्दे
तुम्हें पूरी दुनिया से अलग कर दें
तुम्हारे अपने तुम से दूर हो जायें
तुम्हारे दिल और दिमाग़
झूठे अभिमान के नशे में चूर हो जायें
तुम अपने बनाये इन अँधेरों से
इन काली अँधियारी रातों से
बाहर आ जाओ
संसार बहुत विस्तृत है
अपनी झूठ की छोटी-सी दुनिया
जिसमें तुमने ख़ुद को क़ैद कर रखा है
उससे बाहर झाँककर देखो
तुम्हारे पर्दों से
बाहर बहुत रौशनी है
असली ख़ुशी है

जीने का राज़

जब भी दुखों के काले बादलों ने
गरजकर
दर्द की बिजलियों ने
कड़ककर
हमें दहलाना चाहा
जब भी अपनों के पराये व्यवहार ने
ज़माने की अनदेखी मार ने
हमे तड़पाना चाहा
जब लोगों ने झूठे वायदों की तलवार
प्यार में छुपी विषबुझी कटार से
हमें बहलाना चाहा
हमनें छोड़ दिया ख़ुद को
दुनिया की भँवर में
समय की लहरों से दोस्ती कर ली
और कहा
चलो
मैं तुम पर चढ़कर
दुनिया की सैर करुँगी
सारे अहसास और अनुभव
अच्छे और बुरे
दुनिया के सारे पेचोख़म
सारे ख़ुशी और ग़म
सब तुमसे सीखकर
इस दुनिया में जीने का राज़
मुझे तुमसे जानना है
हाँ, मुझे बहुत कुछ सीखना है
हाँ, मुझे इस दुनिया में जीना है।

अनजाने रिश्ते

जुड़ते चले गए हम
अनजान रिश्तों में
कुछ लोग बदल गये जब
फरिश्तों में
यूँ तो हम दुनिया के सताए हुए थे
दूसरों से अधिक अपनों से
चोट खाए हुए थे
उनकी आँखों में छाए
परायेपन को देखकर
हम अपने से पराए
हो चले थे
कैसे-कैसे रिश्तों के
कैसे-कैसे सिलसिले थे
लेकिन इस लाचार और
बेजार ज़िन्दगी में कभी-कभी
कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं
जिनके अंदर की इंसानियत
अभी बाकी है
जिनमें रिश्तों को निभाने की
सलाहियत अभी बाकी है
ऐसे ही लोग
ज़िन्दगी के फलसफे को बदल देते हैं
एक अनजान रिश्ते में सबको
जोड़ लेते हैं
ज़िन्दगी के रुख़ को एक नया
मोड़ देते हैं

कोई नही आयेगा

अपने अन्दर का अँधेरा
तुम्हें ख़ुद ही मिटाना होगा
कोई दीपक जलाने नहीं आयेगा
अपनी राहों को तुम्हें
ख़ुद ही सजाना होगा
कोई मंज़िल तक पहुँचाने नहीं आयेगा
अपनी आँखों को रखना
सदा खोलकर
कोई रौशनी दिखाने नहीं आयेगा
दुनिया में अपनी जगह
ख़ुद ही बनानी होगी
कोई आगे बढ़ाने नही आयेगा
अपने हाथों से सँवार लो
ज़िन्दगी अपनी
कोई ज़िन्दगी सँवारने नहीं आयेगा
अपने दामन को भर लो
अपनी ख़ुशियों से
कोई ख़ुशियाँ लुटाने नहीं आयेगा
कर लो जितने जतन कर सको
सँभलने के
कोई गिरते को उठाने नहीं आयेगा
अपने घर की आग
तुम्हें ख़ुद ही बुझानी होगी
कोई अपने हाथ जलाने नहीं आयेगा

रिश्ते और ज़िन्दगी

इन्सान की ज़िन्दगी
रिश्तों का एक जंगल
इन्सान की फितरत
रुठने-मनाने का दंगल
बनाना और बिगाड़ना
बसाना और उजाड़ना
गिरकर सँभलना
सँभल कर गिरना
जब तक सब
एक सन्तुलन में चलता रहता है
इन्सान का जीवन चलता रहता है
जिस दिन इस सन्तुलन का आधार
हाथों से छूट जाता है
रिश्तों का तार टूट जाता है
जब ये तार टूटते चले जायें
अपने रूठते चले जायें
तो कभी-कभी
रिश्तों की मौत हो जाती है
ये मरे हुए रिश्ते
बहुत सताते हैं
न दूर जाते हैं
न पास आते हैं
ये मरे हुए रिश्ते
दिन का चैन और रातों की नींद
छीन लेते हैं
ये ज़िन्दगी में काँटे छोड़ देते हैं
फूलों को बीन लेते हैं
इन मरे हुए रिश्तों से काँटे हटाकर
इनमें फूलों की मुस्कान भरना
इन मरे हुए रिश्तों को ज़िन्दगी देना
इन्सान की ज़िन्दगी का
बहुत बड़ा काम है

एक कहानी

सागर की हर लहर-लहर में
छुपी हुई है एक कहानी
कोई मानो अभी लिखी है
कोई इतिहासों से पुरानी
एक लहर आती है
जाने कितने कितने सपने लाती
दूजी आती सब सपनों को
अपने साथ बहा ले जाती
एक लहर
इठलाती, बलखाती, मुस्काती आती
अठखेलीकर
विहँस-विहँसकर
अपनी मंज़िल से मिल जाती
दूजी अपना लक्ष्य खोजती
चट्टानों से टकराती है
फोड़-फोड़ सिर चट्टानों से
अपना आप मिटा जाती है
लिखा भाग्य में
किसके क्या है
इसका क्या लेखा-जोखा है
कितने आँसू रोया मानव
तब इस सागर को देखा है
ये खारे आँसू मानव के
नहीं सिर्फ़ है सादा पानी
सागर की हर लहर-लहर में
छुपी हुई है एक कहानी

भटकन

सुबह आती
दोपहर
फिर शाम आती
रात आती
ज़िन्दगी
यूँ ही गुज़रती जा रही है
मैं अकेली
मन अकेला
यूँ लगे
सब जग अकेला
भावना
यूँ ही बहकती जा रही है
शून्य जीवन
शून्य तन-मन शून्य पतझड़
और सावन
आत्मा
यूँ ही भटकती जा रही है
शून्य के उस पार जाऊँ
चाँद-तारे तोड़ लाऊँ
कल्पना यूँ ही
महकती जा रही है
इस हृदय की सोन चिड़िया
उड़ रही है
पंख फैलाये
चहकती जा रही है

अमृतघट

शून्य पथ
अंधी दिशायें
मैं कहाँ जाऊँ, किधर जाऊँ बताओ
बीच चौराहे खड़ी मैं
दिग्भ्रमित-सी
देखती चहुँ ओर पगली
सम्भ्रमित-सी
दिग्विमूढ़ खड़ी पुकारूँ
आओ! कोई पथ दिखाओ
तन अँधेरा, मन अँधेरा
निगलता जाता अँधेरा
रात ऐसी ज़िन्दगी है
है नहीं जिसका सवेरा
कोई दो क्षण नेह से आकर बुलाओ
जल गया तन
मिट गया मन
शेष अब क्या रह गया है
था हर इक पल विष बुझा-सा
जो अभी तक भी
जिया है
आखिरी वेला निकट है
कोई अमृतघट पिलाओ

दोस्तों के फूल भी

देख लो आगे अगर,
कीचड़ तो हट जाओ अलग
वरना तो छीटे पड़ेंगे आप पर

सामने बीहड़ नज़र आए अगर
तो बचा दामन चलो
वरना काँटे तो गड़ेंगे आप पर

दोस्तों में गर हों दुश्मन भी छिपे
तीर बरसायेंगे वो तो आप पर

दुश्मनों के तीर तो सहते सभी
दोस्तों के फूल भी
भारी पड़ेंगे आप पर

दुश्मनों की गालियाँ
लौटा सकोगे तुम कभी
दोस्तों की गालियाँ गिरवी रहेंगी आप पर

ज़िन्दगी के फ़लसफ़े
अब लो बदल
दोस्ती भारी पड़ेगी
दुश्मनी से आप पर

ज़िन्दगी की जंग

मुझे ज़िन्दगी से जूझने का
अहसास दिलाने वाले लोग
वक़्त-वक़्त पर मिलते रहे
अलग-अलग रूप में
अपने-अपने तरीके से
सभी ने मुझे सिखाये
जीने के कुछ सलीके
सबकी खुशियाँ हासिल करने की
ज़िन्दगी को
ज़िन्दगी बनाने की परिभाषायें
अलग-अलग
लेकिन लक्ष्य सबका एक
मंज़िल सबकी एक
मेरी बेरंग ज़िन्दगी में
ऐसे ही लोग
रंग भरते रहे
और हम ज़िन्दगी की जंग
लड़ते रहे

असंभव नहीं

मंज़िलों के रास्ते कठिन तो होते हैं
पर असम्भव नहीं
दुर्गम पथों पर चलना
दुखदाई होता है, पर असम्भव नहीं
मानव की इच्छायें असीमित हैं
उन्हें पूर्ण करने के साधन सीमित हैं
इच्छाओं की पूर्ति ही
मानव का लक्ष्य है
किन्तु इच्छायें तो असंख्य हैं
इच्छाओ को आमंत्रण दो
पर उन पर नियन्त्रण भी हो
इच्छा का अर्थ, मात्र स्वार्थ नहीं
परमार्थ भी है
लक्ष्य का आधार, परहितार्थ भी हो
ऐसे ही लक्ष्यों की पूर्ति
मानव को भगवान बना सकती है
इनसे विमुखता
इन्सान को पाषाण बना देती है
ऐसी मंज़िलों के रास्ते
कठिन होते हैं
पर असम्भव नहीं

सागर और मैं

जब भी मैं
सागर के किनारे बैठकर
सागर की उठती-गिरती
चट्टानों पर सिर पटकती
लहरों को देखती हूँ
तो एक अजीब अहसास
जागता है अन्तर में
कितना साम्य है
मुझमें और समन्दर में
वह भी मेरे दिल की तरह
गहरा है
उस पर भी मेरे दिल की तरह
तूफानों का पहरा है
उसकी लहरें भी
किनारों से टकरा-टकराकर
वापिस लौट जाती हैं
मेरे हृदय के तूफ़ान भी
होठों तक आने से पहले ही
वापिस हृदय में
जाकर छुप जाते हैं
सागर भी तो कभी-कभी
मेरी तरह
अपने अन्दर के तूफ़ानों को

खामोश रहकर सहता है
कभी-कभी मेरी ही तरह
इसकी आँखों का खारा जल भी
धीरे-धीरे बहता है
जब भी मैं इसे देखती हूँ
लगता है मेरा इसका
जनम-जनम का नाता है
हाँ,
हर जनम में
जब मेरे अपने
मेरी अस्थियों को
नदी में प्रवाहित कर
अपनी दुनिया में
वापिस चले जाते हैं
तब नदी
मुझे अपने साथ ले जाकर
इसी सागर की गोद तक
पहुँचा देती है
जहाँ मैं अन्तिम विश्राम लेकर
शान्ति और सन्तोष का
तुष्टि और परितोष का
अनुभव करती हूँ
यहीं पर
सागर और मैं
मैं और सागर
एक हो जाते हैं

इच्छाओं का आकाश

समेट लिया है मैंने
अपनी इच्छाओं का
विस्तृत और असीमित आकाश
कतर दिये वो पंख
जो छूना चाहते थे
आकाश की उँचाइयों को
रोक लिये वो अरमान
जो नापना चाहते थे
सागर की गहराइयों को
पहरे लगा दिये
उन अहसासों पर
जो दिलों पर
राज करना चाहते थे
कुचल दिया
उन जज़्बातों को
जो सबको
अपना बनाना चाहते थे
छोड़ दी है अपनी नैया
जीवन सागर की
लहरों के सहारे पर
शायद कभी यह
स्वयं ही
लग जाये
किसी किनारे पर

मुसीबत

क्या मुसीबत है
रोज एक नई मुसीबत है
क्या ज़िन्दगी है
बस मुसीबत पर मुसीबत है
न बढ़ाओ अपनी मुसीबतें
मुसीबत समझकर
करो मुकाबला उनका
एक नसीहत समझकर
अपने दुखों को समझ लो एक परीक्षा
सोच लो यही है विधाता की इच्छा
कर्म करो ऐसे कि कमी हो दुखों में
ऐसा कुछ करो दुख बदल जायें सुखों में
सुख को समझो विधाता का उपहार
दुख को समझ लो चुनौती, करो स्वीकार
एक दुख होता है, दस तुम समेट लेते हो
क्यों व्यर्थ ही परेशानी खुद पर लपेट लेते हो
लक्ष्य पर पहुँचना है तो, पथ से न हो भ्रष्ट
जब कभी आये कष्ट, बुद्धि न हो विनष्ट
निकल आओ मुसीबत से
मक्खन से बाल की तरह
भूल जायेंगे सारे दुख
बीते हुए साल की तरह

स्वभाव

दीपक तो दीपक ही है
दीपक ही रहेगा
वह महल में हो
या झोंपड़ी में
रौशन ही रहेगा
मानव भी मानवता के साथ
जब तक रहेगा
वह देश में रहे
या विदेश में
मानव ही रहेगा
जिस दिन छोड़ देता है कोई
अपने स्वभाव को
उस दिन बाँध लेता है वह
अपने संग अभाव को
यह स्वभाव का अभाव
जन्म देता है
दानवता को
मानव बन जाता है दानव
छोड़कर
मानवता को
जिस दिन कोई चिराग़
जला देता है अपने घर को
पानी की बौछारों से
झुकाना पड़ता है
उसे सर को
ऊँची उठी चमकती लौ
नीचे झुक जाती है
गलत चाल
चलती हुई ज़िन्दगी
यूँ ही रुक जाती है

छोटे-छोटे सपने

आओ कुछ छोटे-छोटे सपने सजा लें
आओ किसी को
दूर से बुलाकर
अपना बना लें अपने पराये का जब
भेद भूल जायेंगे
सुख और दुख को
एक समझकर
ज़िन्दगी की डोरी पर
निःशंक झूल जायेंगे
रातों को आयेगी
नींद बड़ी प्यारी
चाँद तारों की दुनिया
लगेगी बड़ी न्यारी
मन कहेगा नींद में
किसी को बुला ले
आओ कुछ थोड़े से सपने सजा लें
रुह को रुह से
प्यार जब हो जायेगा
तेरे और मेरे का
भेद ही मिट जायेगा
एक धार बहेगी
प्यार की दुलार की
सब को भिगो देगी
नेह भरी खुशियों से
किस्मत पलट देगी
पूरे संसार की
रातों को नींद में
कुछ मीठी मधुर
यादें बसा लें
आओ कुछ प्यारे से सपने सजा लें

नोट और वोट

राज चलता गया
देश चलता गया
राजा आते रहे
और खाते रहे
जनता गणतंत्र के
गीत गाती रही
सुन के भाषण
वो ताली बजाती रही
महल राजाओं के
ऊँचे चढ़ते गये
झोंपड़े भी तो लाखों में
बढ़ते गये
वो अमीरी की रेखा से
ऊँचे गये
ये गरीबी की रेखा के
नीचे गये
नोट मिलते रहे
वोट बिकते रहे
आत्मा को स्वयं लोग
ठगते रहे
वोट लेकर वो जनता से
दूर हो गये
चोट देकर वो जनता को
चूर कर गये

अपनो के दिये आँसू

अपनों के दिये ज़ख्म
दिखाये नहीं जाते
अपनों के दिये दर्द
बताये नहीं जाते
अपनों से मिले दाग़
मिटाये नही जाते
अपनों के अंधेरे तो
हटाये नहीं जाते
अपनों से मिली आग
बुझाई नही जाती
अपनों के जुल्म की
दुहाई दी नहीं जाती
अपनों की छीनी नींद
कभी फिर नहीं आती
आती जो कभी पलभर
सपनों में डरा जाती
अपनों के गाड़े काँटे
निकाले नहीं जाते
अपनों के दिये आँसू
बहाये नहीं जाते
अपनों के दिये दर्द
बताये नहीं जाते

यादों के जंगल

यादों के जंगल में
मैं जब भी भटक जाती हूँ
कुछ अजीब से अहसास
मुझे घेरकर
चारों तरफ से मुझे
दबोचने लगते हैं
कुछ कँटीले क्षण
कुछ अपने बेगाने
कुछ हँसते पल कुछ सपने अनजाने
यादों के इन जंगलों में
मैं घायल हिरनी-सी
भटक-भटककर
काँटों से अपना दामन
बचाना चाहती हूँ
पर दिल में गड़े ये काँटे
मेरे दामन को तार-तार कर देते हैं
मेरे हँसते पल
और सुनहरे सपने
सब इन काँटो से उलझकर
चूर-चूर हो जाते हैं
मैं इन यादों से निकलने की
जितनी कोशिश करती हूँ
उतना ही मैं काँटो में उलझ-उलझकर
फँसती जाती हूँ
जैसे दलदल में फँसा आदमी
निकलने के प्रयत्न में
और अधिक धँसता चला जाता है

जीवनधारा

क्या कहना है
क्या सुनना है
जीवन तो लेना-देना है
कोई जीवन में जुड़ जाता
रिश्तों के धागे में बँधकर
और तोड़ देता है कोई
धागे इस ताने बाने के
अपना और पराया क्या है?
जीवन के दर्शन की बातें
कभी पराये अपने बनते
और लगाते अपने घातें
यही विडम्बना है जीवन की
सब कुछ चुप रहकर सहना है
जीवन तो बहती नदिया है
जाने किन राहों पर जाये
चलते-चलते कहीं अचानक
बदलें राहें कित बह जायें
पार लगा दे किसी नाव को
डूबे कोई बीच धार में
जीवन के कितने पहलू हैं
क्या रखा है जीत-हार में
जीवन नदिया के गुलाम
जीवन धारा में बहना है
क्या कहना है
क्या सुनना है
जीवन तो लेना-देना है

अनुभव और अनुभूति

जीवन
एक निरन्तर अनुभव
एक निरन्तर अनुभूति का नाम है
ऐसी अनुभूति
जिसे शब्दों में व्यक्त करना
भावों में प्रकट करना
असम्भव है
प्रेत्येक क्षण
मुख से निकला प्रत्येक शब्द
मास्तिष्क से निकला प्रत्येक भाव
किस मानव पर क्या प्रभाव डालेगा
कोई इसका अनुमान नहीं कर सकता
वही शब्द
जो किसी को भावविभोर कर
आकाश की ऊँचाइयों पर पहुँचा देते हैं
किसी के लिये लज्जा
और नैराश्य का सृजन करते हैं
अन्तर होता है
कहने और सुनने वाले की
समझने और समझाने वाले की
भावनाओं और मनःस्थिति में
सुनने में समझने में सुनाने और समझाने में
अनुभव समझाता है
अनुभूति समझती है
अपने अपने ढंग से
जीवन को दोनो रंगते हैं
अपने-अपने रंग से

विश्वास

तेरे गीतों का आकर्षण
इतना प्रबल था
कि मैं स्वयं गीत बनकर रह गई
तेरे ख्वाबों का अहसास
इतना सदेह था
कि मैं स्वयं अहसास बनकर रह गई
तेरी आहों का दाह इतना तीव्र था
कि मैं स्वयं लपट बनकर लिपट गई
तेरी चाहत की आहट
इतनी मूक थी
कि मैं स्वयं निःशब्द बनकर रह गई
मीत तेरी प्रीत में
इतना आवेग था
कि मैं स्वयं प्रीत बनकर रह गई
तेरे स्नेह में
इतना विश्वास था
कि मैं विश्वास बनकर रह गई

मंज़िल की राह

दर्द सहना भी बड़ी मुश्किल है
दर्द कहना भी बड़ी मुश्किल है
कोई हिम्मत करे, कहे कैसे
जुल्म सहना भी, बड़ी मुश्किल है
दास्ताँ उनकी क्या सुने कोई
अपनी कहना भी, बड़ी मुश्किल है
कौन है दोस्त, कौन है दुश्मन
इसकी पहचान, बड़ी मुश्किल है
भेद अपने में, और पराये में
जान लेना नहीं आसान, बड़ी मुश्किल है
हसरतें पालना तो, है आसान बहुत
कैसे चढ़ पायेंगी परवान, बड़ी मुश्किल है
मुझमें उसमें हैं, दूरियाँ कितनी
एक जमीं दूजा आसमान, बड़ी मुश्किल है
कितनी राहें हैं, कितने चौराहे
मंज़िलों की राह, बड़ी मुश्किल है

अस्तित्व के लिये

मानव प्रकृति के अनुसार
मानव को अपने कार्य से
कभी आशा मिलती है
कभी निराशा
प्रशंसा है आशा
आलोचना निराशा
किन्तु कोई भी
सकारात्मक या नकारात्मक आलोचना
तुम्हें प्रभावित न करे
किसी अन्य के विचार
तुम्हें हतोत्साहित न करें
तुम अपनी आत्मा के अनुसार
अपनी कल्पनाओं को रचो
जिस कार्य का उत्तर
तुम स्वयं को न दे सको
ऐसे कार्य से बचो
जो भी काम करो
मन प्राण से करो
जो भी करो कुछ ठानकर करो
शायद पहले तुम्हारे काम को
उपहास फिर विरोध
और अंत में स्वीकृति मिले
कार्य वही करो
जिससे तुम्हारे व्यक्तित्व को
एक सम्माननीय आकृति मिले
आत्म विश्वास और दृढ़ इच्छाशक्ति
आवश्यक है
तुम्हारे व्यक्तित्व के लिये
सद्कार्य ही करने हैं तुम्हें
अपने अस्तित्व के लिये

टूटता सपना

ढूँढने निकले थे हम
दुनिया की भीड़ में
एक अपना
भीड़ तो बहुत मिली
पर मिला नहीं
कोई अपना
हर नज़र में
एक अजीब-सी भूख थी
किसी को कुर्सी की
किसी को दौलत की
किसी को नाम की
किसी को कोई
अनजानी-सी भूख थी
किसी भी नज़र में
नज़र नहीं आई
हमदर्दी या समर्पण की भावना
हर दिल एक टूटा तार-सा था
हर दिमाग़ एक जंगल वीरान-सा था
हर निगाह थी खाली
जैसे फूल से बिछड़ गई डाली
ऐसे में कहाँ दिखाई देता
प्रेम, प्यार, स्नेह
यहाँ तो सभी हैं विदेह
दूसरों से तो क्या
स्वयं से भी अनजान
भीड़ में भी आस-पास
सब कुछ वीरान
ऐसे में टूट गया
अपना ढूँढ़ने का सपना
भीड़ में अकेले खड़े
देख रहे थे
टूटता सपना

अँधियारे रास्ते

ये किस जगह से
बुलाती है ज़िन्दगी मुझको
अँधेरे सब तरफ
दिखाई दे न कुछ मुझको
कहीं भी रौशनी की
इक किरण नहीं दिखती
कभी भी दिल में दबे दर्द की
चुभन नहीं मिटती
चले हैं अपने ही काँधों पे
अपनी लाश लिये
मिले हैं दुनिया से हम
इक नज़र उदास लिये
ये ज़िन्दगी का जीना भी
कितना अजीब है
जीना है सबको
सबकी अपनी सलीब है
अब चाहती हूँ तुझसे
पूँछु ऐ ज़िन्दगी
तूने दिया मुझे क्या
जो करूँ तुझको बंदगी
तूने मुझे दिये हैं
अँधियारे रास्ते
जीना मुझे भला क्यों
कहो! किस के वास्ते

मैं और पेकृति

सात सुरों में ढालूँ
मैं अपने जीवन को
और समा जाऊँ
सारी सृष्टि के कण-कण में
अपनी सरगम में भर नवरस
बरसाऊँ नव छन्द, ताल नव
गाऊँ गीत घूम वन-वन में
झंकृत करूँ तार वीणा के
गाऊँ प्रकृति के गीत
भरुँ जीवन तन-मन में
कोयल, मोर, पपीहे से ले
मधुर सुरों की तान
झूमती जाऊँ बहकती
वन-उपवन में
तितली से ले रंग
भ्रमर से गीत
चातकी से
भर मन में प्रीत
महकती जाऊँ कहीं
छुप जाऊँ
घन कानन में

बेनक़ाब

कई बरसों से
रंज-ओ-ग़म पी-पी के
दिल के अन्दर की परतो में
सी-सी के
कुछ अरमान छिपाकर रखे थे
न जाने आज कैसे
अचानक ही
बेनक़ाब हो गए
होंठ तो बन्द थे
ज़बान भी हिली न थी
चेहरे पर भी
मुखौटा चढ़ा रखा था
चेहरे की हर लकीर को
चुप का पाठ पढ़ा रखा था
मैंने तो अरमानों को
कभी हवा भी नहीं दी
अपने ज़ख्मों की कभी
दवा भी नही की
फिर कैसे ये सारे बंधन
तोड़कर आज़ाद हो गए
कई बरसों से जो राज़
छिपाकर रखे थे
अचानक ही कैसे
बेनक़ाब हो गए

बस एक बार आओ

बस एक बार आओ
तुम एक बार
मेरे जीवन में आओ
मेरे खाली आँचल को
खुशियों से भर जाओ
दूर कही जंगल में
अनजानी राहों में
डूब न मैं जाऊँ
दुखभरी आहों में
किसी भी वन-उपवन में
कंदर में कानन में
दामन को मेरे
काँटों से बचाओ
रीते दामन को
फूलों से भर जाओ
बस एक बार आओ
नीरव नदियों में
उफनते समन्दर में
घंटे घड़ियालों के बीच
दूर किसी मन्दिर में
मेरे नीरव कण्ठ में
संगीत भर जाओ

नीरस जीवन में
मधु-प्रीत भर जाओ
बस एक बार आओ
यदि इतने ही निष्ठुर हो
कुछ दे ही नहीं सकते
दो मीठे बोल भी
कह नहीं सकते
तो तुष्टि नहीं
तृषा बनकर आओ
प्रेम नहीं दे सकते
तो घृणा दे जाओ
पर एकबार आओ
बस एक बार आओ

दिग्भ्रान्त पथिक

मैं दिग्भ्रान्त पथिक
मुझको मेरी मंज़िल की राह दिखा दो
चौराहे पर खड़ी दिग्भ्रमित
शून्य-शून्य क्षितिज तक लक्षित
मैं जड़ बनकर खड़ी हुई हूँ
और चेतना खोती जाती
क्या अतीत था
क्या भविष्य है
यही वेदना होती जाती
जीवन चक्र घूमता जाता
कौन अदृश्य ताल देता, और
यह संसार झूमता जाता
किन्तु चक्र मेरे जीवन का
बीच भँवर में डूब रहा है
जीवन के हर इक क्षण से क्यों
मेरा अन्तर ऊब रहा है
मेरी नैया डूब रही
मुझको साहिल की राह दिखा दो
मैं दिग्भ्रान्त पथिक
मुझको मेरी मंज़िल की राह दिखा दो

उलझी ज़िन्दगी

आज अचानक
न जाने क्यों
न जाने कैसे
आईना मेरे सामने
और मैं आईन के सामने आ गई
आईने में मैंने जिसे देखा
वह कौन थी?
मैं उसे पहचानने की
कोशिश कर रही थी
पर नज़र धुँधला रही थी
नहीं---
शायद मैं खुद को झुठला रही थी
आज ज़िन्दगी के इस मोड़ पर
लग रहा है क्या यही ज़िन्दगी थी?
कब शुरू हुई
कब बीत गई
आज मेरी अपनी नज़रें
खुद को पहचान नहीं पा रहीं
मेरा व्यक्तित्व क्या था
मैं नही जान पा रही
कैसे मैं ज़िन्दगी
की उलझनों में
इतना उलझ गई
कि ज़िन्दगी कब मेरे हाथों से
फिसल गई
कब मेरी ज़िन्दगी
बर्फ़-सी पिघल गई
कब मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व की डोर
मेरे हाथों से निकल गई
मुझे पता ही न चला

सच और झूठ

कुछ सच्चाईयाँ ऐसी होती हैं
कि जब तक वे
झूठ के पर्दे के पीछे छिपी रहें
तभी तक अच्छी लगती हैं
कुछ झूठ भी ऐसे होते हैं
जिन्हे जब तक सच मानते रहें
तब तक ही ज़िन्दगी
शान्ति से चलती है
झूठे सच
और
सच्चे झूठ
जब तक सैंकड़ो पर्दो के पीछे छिपे रहें
तभी तक रिश्तों की दीवारें
मजबूती से खड़ी रहती हैं
जिस दिन ये दोनों
पर्दो से बाहर आ जाते हैं
रिश्तों में दरार आ जाती है
बातों में तकरार आ जाती है
इसीलिये
कुछ कड़वे सच
कुछ मीठे झूठ
अपनी-अपनी
खुशफ़हमियों के साथ
पर्दो के पीछे ही छिपे रहें
तभी घर परिवार
मन का संसार
चलता रहता है

अमृता

नारी!
तुम अमृता हो
तुम शक्तिरूपा हो
फिर क्यों तुमने अपने आकाश को
इतना छोटा कर लिया है
कि उसके नीचे तुम
न सीधी खड़ी हो सको
न अपने पंख पसार सको
न एक स्वतंत्र उड़ान भर सको
तुम अबला नहीं सबला हो
उठो, जागो!
और अपने आकाश को
माँ के आँचल-सा विस्तृत करो
लाँघ जाओ रुढ़िवादिता की
अपारम्परिक सीमाओं को
बन जाओ सीता, सावित्री
गार्गी, अनुसूइया, मैत्रेयी
न छोड़ो अपने अधिकार
न डालो अपने हथियार
जीत लो विस्तृत आकाश की
असीमित सीमाओं को
रहकर बुद्धि की सीमाओं के भीतर
अधिकार और कर्तव्य का संतुलन ही
बुद्धिमत्ता है
इसी संतुलन को लेकर
उठो, जागो!
संतुलित करो संसार को
अमृतमय करो व्यवहार को
नारी!
तुम अमृता हो

प्रेरणा

कौन अपना है
कौन पराया है
आज तक इसे
कौन समझ पाया है
कभी अपने सगे
पराये बन जाते है
कभी कुछ अनजान
अपरिचित
न जाने कहाँ से आकर
अन्तर का श्रृंगार बन जाते हैं
कभी दुखों के क्षण में
अपनों की भीड़
काई-सी फट जाती है
तभी कहीं से कोई एक
अजनबी प्रकाश की किरण
यकायक किसी रूप में आकर
प्रेरणा का स्रोत बन जाती है
सृष्टि में यह क्रम
निरन्तर चल रहा है
और इसी से
सृष्टि का क्रम चल रहा है
अन्यथा घिर जायें लोग
अपने पराये के घेरों में
डूब जायें सारे रिश्ते
दूरियों के अँधेरों में

अपना-अपना आकाश

सबका अपना-अपना एक आकाश होता है
उसी आकाश में उनके सम्पूर्ण अस्तित्व का
निवास होता है
किसी के आकाश में सूरज और चाँद
रौशनी का सैलाब लिये खड़े हैं
किसी की सतरंगी चूनर में
चाँद सितारे जड़े हैं
किसी के आकाश में
आकाशगंगा
अमृत कलश लिये राह ताक रही है
किसी के लिये उसके आकाश की
हर खिड़की से खुशियाँ झाँक रही है
किसी का आकाश
पूर्ण सूर्य ग्रहण-सा काला है
किसी के आकाश को
शत-शत अमावस्याओं ने पाला है
किसी की चूनर के सारे सितारे टूट गए हैं
किसी की ख़ुशियों को उसके अपने ही लूट गए हैं
किसी के आकाश में काले बादल छाये हैं
किसी की आँखों में
आकाश की सारी वर्षा जितने आँसू समाये हैं
आकाश के हर रंग में
सबको अपने-अपने
जीवन के अलग-अलग रंगों का
आभास होता है
इसी लिये सबका अपना-अपना
एक अलग आकाश होता है
सब अपने-अपने आकाश में
ग्रहों की भाँति घूमते रहते हैं
और ज़िन्दगी के दिन यूँ ही
बीतते रहते हैं

फिसलता वक़्त

वक़्त मेरी मुट्ठियों से, यूँ निकलता जा रहा है
जैसे दरिया बर्फ़ का, क्षण-क्षण पिघलता जा रहा है।
क्या मिला, क्या खो दिया, इस वक़्त की रफ़्तार में
इसका पता कोई लगा पाया कभी क्या
दिया क्या, ले लिया, इस ज़िन्दगी की धार ने
इसका गणित कोई लगा पाया कभी क्या
वक़्त ने मारा कभी पुचकार कर बहला दिया
या कभी दे थपकियाँ, कल दे दिये जो धाव
उनको प्यार से सहला दिया
वक़्त ने अहसास पर, विश्वास पर
या न्याय और अन्याय पर जो भी दिया मुझको
लिया मैंने झुकाकर शीश
फिर भी वक़्त मेरे हाथ से
ऐसे फिसलता जा रहा है
जैसे दरिया बर्फ़ का
क्षण-क्षण पिघलता जा रहा है

जीवन-मृत्यु

जीवन और मृत्यु
दोनों के मध्य
होता है एक विशेष अन्तर
दोनों का अर्थ
बिल्कुल विपरीत
एक हार
दूसरा जीत
एक खुशी
दूसरा ग़म
एक अमावस
दूसरा पूनम
एक दिन दूसरा रात
एक आनन्द दूसरा आघात
किन्तु कभी-कभी
किसी के जीवन में
मे दोनों शब्द
एक होकर मिल जाते हैं
नया शब्द बनता है
जीवन-मृत्यु
ऐसा व्यक्ति
बड़ा अनोखा जीवन जीता है
जी-जीकर मरता है
मर-मरकर जीता है
यह जीवन मानव के लिये
बड़ी विडम्बना का होता है
जब मानव जीवन में मृत्यु के लिये
और मृत्यु में जीवन के लिए रोता है
दो विपरीत छोर पकड़कर जीना
कितना कठिन है
जब एक ही ज़िन्दगी में
एक साथ जीवन और मरण है

किस्मत के रंग

किस्मत के रंग
कौन जान पाया
किसकी किस्मत खुली
किसकी है बंद
कौन पहचान पाया
किसके माथे पर लिखे
कितने संघर्ष
किसको मिलेंगे
संकट दुर्द्धर्ष
किसका लक्ष्य
पगभर की दूरी से
छूट जायेगा
किसका हृदय
क्षणभर में
शीशे-सा टूट जायेगा
किस के स्वप्न
कभी साकार न हो पायेंगे
किस के अरमान
कभी आकार न ले पायेंगे
कब कौन रसातल को पहुँच जाये
कब कोई
आकाश की ऊँचाइयों को छू जाये
ये सब बंद मुट्ठी की कथायें हैं
इन प्रश्नों के उत्तर
किसी ने नहीं पाये हैं
सृष्टि के कण-कण में
किस्मत की माया
किस्मत ने अपनी ताल पर
सबको नचाया
किस्मत के रंग
कौन जान पाया

चाँद के दाग़

जाने कौन से दुखों ने
चाँद को छेद डाला है
कितने ग़मों के बादल
चाँद के चेहरे पर
दाग़ बनकर उभर आए हैं
चाँदनी के रूप में
न जाने कितने आँसू
चाँद ने बहाए हैं
सदियों से
चाँद आता है
कभी ख़ुद रोता है
कभी विरहियों को रुलाता है
चाँद को सब
अपनी दृष्टि से देखते हैं
पर कभी किसी ने
चाँद को चाँद की दृष्टि से नहीं देखा
क्यों कभी यह सूखकर
काँटा हो जाता है
किस आस में
कभी वह
पूरे यौवन पर आ जाता है
किसको बुलाता है
चाँद के चेहरे के दाग़ों के पीछे
कौन-सी कहानियाँ हैं
कोई तो बताओ
ये दाग़ किसकी निशानियाँ हैं
कौन है
जिसने चाँद का हृदय बेध डाला है
कौन से दुखों ने
चाँद को छेद डाला है

परिचय और अपरिचय

जीवन की राहों में चलते-चलते
कितने ही जाने अनजाने
लोग मिल जाते हैं
कितने ही अपने बेगाने
चेहरे दिख जाते हैं
राहें खत्म नहीं होती
हर दोराहे या चौराहे पर
रास्ता एक
नई दिशा की ओर मुड़ जाता है
नई राह में कोई एक
नया परिचय जुड़ जाता है
ज़िन्दगी अपनी रफ्तार से
चलती रहती है
जीवन की नदिया
निरन्तर बहती रहती है
कितने ही परिचित
आधी राह में छोड़कर
चले जाते हैं
कितने ही अपरिचित
अपने बन जाते हैं
परिचय, अपरिचय में
बदल जाता है
अपरिचय, परिचय में
बदल जाता है
जीवन का, राहों का
परिचय का, अपरिचय का
सबका क्रम
चलता रहता है
जीवन
निरन्तर चलता रहता है

अपनी पहचान

मुझे मेरी आस्तित्वहीनता का
मेरी व्यक्तित्वहीनता का
बोध कराने के लिये
तुम्हारा धन्यवाद
किन्तु तुमने कैसे मुझे
एक लावारिस लाश समझ लिया
मैं भी उस परमात्मा की ही
एक कृति हूँ
जिसने यह सृष्टि रची है
फिर कैसे तुम
तुम हो
और मैं
मैं नहीं हूँ
ऐ मेरे हितैषी
मेरा मैं ही मेरी आत्मा की पहचान है
मेरी आत्मा परमात्मा का रूप है
फिर मेरे मैं का अस्तित्व
तुम्हारे मन में
क्यों इतना विरूप है
सृष्टि के कण-कण से
मेरा अन्तर सुवासित है
मैं जीवित रहूँगी
अपने.सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ

मैं मरूँगी
अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ
मेरा जीवन खिलौना नहीं
जिसे जो चाहे तोड़ दे
या जब चाहे अपने ढंग से मोड़ दे
मैं अपने सम्पूर्ण स्वत्व के साथ
देती हूँ तुम्हें धन्यवाद
मुझे मेरे अस्तित्व का बोध कराने के लिये
मुझे मेरे व्यक्तित्व की याद दिलाने के लिये
मुझे मेरे मैं का ज्ञान कराने के लिये
मुझे खुद से अपनी पहचान कराने के लिये

परिक्रमा

मेरे जीवन के स्पंदन में
जो स्वर तुमने दान किये
वे ही बने गीत जीवन के
मैंने भर मन प्राण लिये

मेरे अन्तर के सागर में
जीवन जल बन तुम रहते
जब मिलना चाहूँ मैं तुमसे
आँखों के बाहर बहते

जीवन चक्र चलाने वाली
धुरी सदा ही तुम प्रियतम
अपने अन्दर तुम्हें देखती
जब मैं देखूँ अन्तरतम्

मेरे जीवन में बजती है
तेरे ही सुर की सरगम
उन्हीं सुरों में भूल जाऊँ मैं
दुनियाभर के सारे ग़म

मेरे जीवन की हर झाँकी
बिना तुम्हारे रहे अधूरी
तेरी यादों से परिक्रमा
होती है जीवन की पूरी

एक सितारा

एक सितारा
टिम-टिम करता
झाँक रहा मेरी खिड़की से
एक सितारा
छुप-छुप आता
आम नारियल के पेड़ों की आड़ बनाता
चंदा की छाया में आता
धरती की माया बन जाता
चमक-चमककर मुझे रिझाता
इकटक खड़ा निहार रहा
मेरा घर आँगन, मेरे छोटे से घर की छोटी खिड़की से
एक सितारा
प्यारा-प्यारा
मेरे मन की पूछ रहा, कुछ मुझे सुनाता
सुख-दुख मेरे बाँट रहा, मेरा बन जाता
बचपन से अबतक की बातें याद दिलाता
बीते बरसों की कहानियाँ
अपनी छवि में दिखा रहा मेरी खिड़की से
वही सितारा
जो बचपन में
आता था मेरे आँगन में
आज मेरे जीवन की इस संध्या वेला में
मुझसे मिलने आया
मुझको अपने पास बुलाने आया
मेरे छोटे से घर की छोटी खिड़की से

क्षितिज के पार से

दूर बहुत दूर
जहाँ जाकर मेरा दृष्टिपथ
अपनी दिशा खो बैठता है
दूर बहुत दूर
जहाँ नीला आकाश
नीले सागर से गले मिल जाता है
उस क्षितिज के पार से
एक एकाकी नौका
लहरों के थपेड़ों को ठुकराती
विशाल सागर की छाती को चीरती
हर उफनती, गरजती लहर पर
अट्टहास करती
उन्हें अपने तले रौंदती
चली आ रही है
और मुझमें एक विश्वास जगा रही है
कि ज़िन्दगी के बड़े से बड़े तूफान में
संसार और समाज के विशाल सागर में
एकाकी रहने पर भी
हिम्मत मत खोना
और अपनी जीवन नैया को
डूबने मत देना
बिखरने मत देना
सिसकने मत देना
रुकने मत देना

मेरी पहचान

आज मैं अपने अन्तर में झाँककर
ढूँढ रही हूँ ख़ुद को
मैं कौन हूँ?
मेरी अपनी पहचान क्या है?
इस प्रश्न पर
मैं मौन हूँ
ज़िन्दगी में कितनी बार
मेरी पहचान बदली है
जैसे पानी को
किसी के साथ मिला देने पर
वही पहचान मिली है
बचपन में माता-पिता की
प्यार भरी सख़्तियाँ
जो बेटी के भविष्य को सँवारने के लिये
शायद जान बूझकर की गई
बेटी के भविष्य के लिये
सहमे हुए माँ-बाप
अपने विचारों के अनुसार
मेरी एक आकृति गढ़ते रहे
फिर पति के घर में
मेरी उस प्रतिमा को
उस घर के कायदे के हिसाब
काट-छाँटकर तराशा गया
और मैं स्वयं को भुलाकर
उनकी छेनियों से छँटती चली गई

और आज
मेरे बच्चे
मेरे अपने जिगर के टुकड़े
मुझे अपने ढंग से
अपने नये ज़माने के अनुसार
मुझे बदल रहे हैं
मैं ख़ुद भी अपने आपको
एक नया चेहरा देने की
कोशिश कर रही हूँ
घर की शांति और सौहार्द्य के लिये
फिर भी यह प्रश्न
मुझे बार-बार कौंच रहा है
मैं कौन हूँ ?
मेरी अपनी पहचान क्या है?
मेरे विचारों को
मेरी अनुभूतियों और संवेदनाओं को
सब अपने-अपने ढंग से
बदलते रहे हैं
और मैं एक रोबोट की भाँति
उनके आदेशों का पालन करती रही
फिर भी
जब मैं अकेली होती हूँ
मैं अपने में अपने के ढूँढती हूँ
अपने को पहचानना चाहती हूँ
पर सब कुछ गड्डमड्ड हो जाता है
रह जाता है सिर्फ़ एक प्रश्न
मैं कौन हूँ?
और इस प्रश्न पर
मैं मौन हूँ

किस सुख की आशा में

बीते हुए कल
और आने वाले कल की चिन्ता में
हम अपना आज क्यों भूल रहे है
क्यों वर्तमान को बिगाड़ रहे है
क्यों गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हैं
क्यों अनिश्चितता में झूल रहे हैं
जो बीत गया जो रीत गया
जो अतीत हो गया
जो व्यतीत हो गया
जो लाख बुलाने पर भी
एक पल को भी
वापिस नहीं आयेगा
जिसके अच्छे या बुरे
क्षण भर को भी
मिलने नहीं आ सकेंगे
और
वो आने वाला भविष्य
जिसमें सब कुछ है अदृश्य
जिसके एक क्षण का विश्वास नहीं
एक साँस आई
तो दूसरी की आस नहीं
क्या छुपा है भविष्य के गर्भ में
कौन बता सका है?
आज तक इस सन्दर्भ में
तो फिर
किस सुख की आशा में
मानव
अपने वर्तमान को
अतीत और भविष्य के दाँवपर
लगा रहा है?

काले साये

दिन अभी तो ढला भी नहीं है
ये शाम-सी क्यों नज़र आ रही है
अँधेरों के आने की सिहरन अभी से
मेरी ज़िन्दगी पर कहर ढा रही है
हजारों अंदेशे बुनें जाल अपना
खुली आँख देखूँ बुरा एक सपना
ये धरती और आकाश लगते पराये
न चंदा न तारे सिर्फ़ काले साये
हर इक साँस डर की लहर ला रही है
घुला दर्द दिल में जिग़र में अभी से
अभी शाम है रात बीतेगी कैसे
जो तन्हाइयों का रहा ये ही आलम
तो जीने न देंगे मुझे मेरे ये गम
हर इक साँस जैसे ज़हर ला रही है
ये सूरज अभी से क्यों छुप सा रहा है
ये माहौल सारा क्यों चुप हो रहा है
अँधेरों के आने के आये संदेशे
कोई कैसे ख़ुद को अँधेरों में देखे
ये क्यों शाम पिछला पहर ला रही है
दिन अभी तो ढला भी नहीं
ये शाम-सी क्यों नज़र आ रही है।

जाना कहाँ है?

ज़िन्दगी से भागना आसान है
पर भागकर जाना कहाँ है?
यह भला किसको पता है?
हर तरफ पर्वत
समन्दर और नदियाँ
राह में हैं
कौन देगा साथ
नफ़रत और लालच
झाँकता हर आँख में है
ग़र किसी जंगल में जाकर
छुप भी जायेगा कोई तो
खुद से भी छुप पायेगा क्या?
यह भला किसको पता है?
मुँह छुपाकर सारी दुनिया से
कोई ठगता किसे है?
एक धोखा दूसरों को
एक देकर खुद को कोई
ख़्वाब में रखता किसे है?
ज़िन्दगी की यह लड़ाई
खुद ही लड़नी है सभी को
अपने अरमानों की मूरत
खुद ही गढ़नी है सभी को
दूसरों से भागना आसान है
पर आत्मा से भागकर
जाना कहाँ है?
यह भला किसको पता है?

दिग्भ्रमित

चक्रव्यूह में फँसा
हाय! जीवन मेरा
घोर अँधेरा
भूल गई हूँ दिशाज्ञान
सब कुछ विस्मृत
दिग्भ्रमित
कुण्ठित
चिन्तित
आतंकित-सी घूम रही
अगणित चिन्ताओं ने घेरा
है निविड़ रात्रि
न कहीं सवेरा
किंकर्तव्य विमूढ़
भागती मृग मरीचिका के पीछे
न ओर-छोर
न दिशा-मोड़
अन्तस् में तिमिर घनेरा
चक्रव्यूह में फँसा
हाय! जीवन मेरा

भग्नप्रतिमा

मन के मन्दिर में प्रतिष्ठित
एक पावन प्रतिमा
आज खण्ड-खण्ड हो गई
सत्यान्वेषण की प्रतिभा
लोक कल्याण के भावों की प्रतिमा
टूक-टूक हो गई
देख जग की वक्र गति को
उद्भ्रान्त हूँ
अशान्त हूँ
लक्ष्यहीन मानव है
भाग रहा पागल बन
थोथे आदर्शों की
ऊँचे विचारों की
मानव कल्याण की
आड़ लिये
ओट लिये
घोट रहा है गला
अपने ही बन्धु का
सब में मिलावट है
भाव में, विचार में
प्यार में, व्यवहार में
मन की गहराइयों में
कटुता का भाव लिये
रखता छिपाये उसे
मृदुता की आड़ में
सत्य कहाँ है?
कहाँ खोजूं?
कैसे पाऊँ?
इसी लिये तो कहती हूँ
मेरे मन के मन्दिर में प्रतिष्ठित
एक पावन प्रतिमा
आज
खण्ड-खण्ड हो गई

किसे निमन्त्रण देते ये सब

कुहुककर कोयलिया बुलाती किसे है
मधुर धुन मुरलिया सुनाती किसे है
वो है कौन जो छुप के बैठा गगन में
लगे चाँद तारे हैं किसकी लगन में
चमककर बिजुरिया दिखाती किसे है
कुहुककर कोयलिया बुलाती किसे है
ये है किसकी लाली जो फूलों में छाई
ये है किसकी शोभा जो सबमें समाई
विहँसकर ये कलिका रिझाती किसे है
कुहुककर कोयलिया बुलाती किसे है
ये किसके मधुर स्वर दिशाओं में छाये
ये किसके तराने जो भंवरों ने गाये
सुमन डाल झुककर झुलाती किसे है
कुहुककर कोयलिया बुलाती किसे है

वेदना

जब हृदय में हों भरी अनगिन व्यथायें
तब कोई कैसे जिए इतना बता दो!

आग मन में हो लगी तन हो झुलसता
कह न पायें अधर अन्तर की विकलता
भावनाओं का जलधि जब हो मचलता
तोड़ दे सीमायें जब भावों की प्रबलता

फट गये हों जब परत अर्न्तपटल के
तब कोई कैसे सिये इतना बता दो!

घिर रहे हों सैंकड़ों घन नैन नभ में
किन्तु आँसू एक भी न हो प्रकट में
हों भरे झंझा-झकोरे हृदयतल में
लक्ष्य तक न हो कहीं उद्वेग तन में

प्यास जिसको हो लगी मधुमय अमी की
विष कोई कैसे पिये इतना बता दो!
जब सतायें अनकही अनगिन कथायें
तब कोई कैसे जिये इतना बता दो!

शून्य

धुँआ बन ये जीवन उड़ा जा रहा है
मेरा पथ किधर को मुड़ा जा रहा है
मैं पथभ्रष्ट राही नहीं कोई मंज़िल
मेरी नाव का है नहीं कोई साहिल
घनी धुन्ध में खोई जीवन की राहें
कहीं खोईं खुशियाँ रहीं, सिर्फ़ आहे
सभी साज जीवन के थम से गए हैं
मेरे गीत संगीत गुम हो गए हैं
हृदय में ये कैसे अँधेरे भरे हैं
सभी ओर बादल घनेरे खड़े हैं
नहीं शेष है अब कोई चाह मन में
रही मृत्यु की चेतना शेष तन में
बस अब शून्य से सब जुड़ा जा रहा है
धुँआ बन ये जीवन उड़ा जा रहा है

रौशनी लाओ

अँधेरे दिल के मिट जायें
कहीं से रौशनी लाओ
ये सब दु:ख-दर्द मिट जायें
कहीं से रौशनी लाओ
घिरे बैठे हो क्यों ऐ दोस्त
अपने ही अँधेरों में
सवेरों की जरुरत है
कहीं से रौशनी लाओ
कहीं डस लें न ये तारीक़ियाँ
इस ज़िन्दगानी को
जियें कैसे अँधेरों में
कहीं से रौशनी लाओ
अगर आँखे करोगे बंद
तो क्या चैन पाओगे
मिला लो दिल को दिल से तुम
कहीं से रौशनी लाओ
न भूलो रास्ते अपने
यूँ दुनिया के इशारों पर
दिखा दो राह मंज़िल की
कहीं से रौशनी लाओ

कराहट

कटे कैसे यूँ ज़िन्दगी तन्हा-तन्हा
चले कैसे यूँ ज़िन्दगी तन्हा-तन्हा

न रातों में नीदें दिनों में न राहत
न अरमान कोई न है कोई चाहत
न मीलों तलक आज कोई भी आहट
बनी ज़िन्दगी दर्द की इक कराहट
गई महफिलें छोड़ कर तन्हा-तन्हा
कटे कैसे यूँ ज़िन्दगी तन्हा-तन्हा

ख़ुशी ढूँढना इतना आसाँ नहीं है
हमेशा ख़ुशी दिल की मेहमाँ नहीं है
न ग़म हो जिसे कोई चेहरा नहीं है
अंधेरा मेरे ग़म से गहरा नहीं है
यूँ बेचैन कैसे रहें तन्हा-तन्हा
कटे कैसे यूँ ज़िन्दगी तन्हा-तन्हा

न सपनों में रंगीन कोई नज़ारे
न सूरज की किरणें न चंदा न तारे
न जीवन में कोई ख़ुशी के तराने
न हँसने के कोई हैं मिलते बहाने
भुलावों में कब तक रहें तन्हा-तन्हा
कटे कैसे यूँ ज़िन्दगी तन्हा-तन्हा

नया प्रभात

जीवन मेरा सूनी बगिया
जीना पतझड़ मेरा है
रात अँधेरी कारी मेरी
धुँधला शाम सवेरा है
न जाने कितने सूने पल काटे
जिये शून्य में लाखों पल
अपनों के स्वप्नों में भटकी
रहे स्वप्न भी सदा विफल
नहीं काटने से कटता है
छाया कुहर घनेरा है
रात अँधेरी कारी मेरी
धुँधला शाम सवेरा है
रुकी ज़िन्दगी दोराहे पर
दिग्भ्रम मुझे हुआ है आज
कब मेरे रीते मानस में
आयेगा फिर नया प्रभात
छुपा हुआ है किस गह्वर में
वह जो चतुर चितेरा है
रात अँधेरी कारी मेरी
धुँधला शाम सवेरा है

दर्द और मुस्कान

दर्द कौन-सा छुपा हुआ
इन मुस्काते होठों के पीछे
छुपे हुये हैं कितने आँसू
इन गहरी आँखों के नीचे
अन्तर की परतों के अन्दर
कितने अरमाँ टूट रहे हैं
गहन ह्रदय के पीछे छिपकर
कितने छाले फूट रहे हैं
ह्रदय बनाया गहरा सागर
फिर भी लहरें नहीं समाती
कभी-कभी दर्दीली लहरें
आँखों में आ लहरा जाती
कैसा है यह नियम सृष्टि का
रोने पर भी रहे नियंत्रण
अन्तस् में हो रुदन भरा
मुख पर मुस्कानों को आमंत्रण
कौन सुने अन्तस् की भाषा
कौन पढ़े मुख की परिभाषा
सब अपने सपनों में खोये
ढूँढ रहे हैं झूठी आशा
अपने-अपने दर्द समेटे
सब यूँ ही जीते जाते हैं
मुख पर झूठी हैसी लपेटे
अन्दर ज़हर पिये जाते हैं

ऐसी आवाज़

चाहिये एक ऐसी आवाज़
जो कानों के रास्ते
दिल और दिमाग़ में
उतर जाये
जो सोई आत्माओं को जगाकर
सम्पूर्ण मानवता की
नस-नस में मुखर हो जाये
जो जगा दे इन्सान की
इन्सानियत को
जो डरा दे
हैवान की हैवानियत को
जो सन्तोष परमधन का
गीत सुनाये
जो पुच्छ विषाण हीन मानव को
साहित्य और संगीत सिखाये
जो शुष्क हृदय में भी
प्रेम प्रीत भर दे
जो मृत होते जीवन में
जीवन संगीत भर दे
जो वसुधैव कुटुम्बकम् का
पाठ पढ़ाये
जो मानवता को
आकाश की ऊँचाई तक चढ़ाये
जो धरती और आकाश को
बाँध दे एक सुर, ताल और लय में
चाहिये एक ऐसी आवाज़

जाग जाओ

जाग जाओ!
नींद से खुद को जगा लो
जो बचा है शेष
उसको अब बचा लो
देश में कैसा ये हँगामा हुआ है
हर बशर लगता है दीवाना हुआ है
झूठ अत्याचार बढ़ता जा रहा है
आदमी ख़ुद से ही लड़ता जा रहा है
प्यार, आदर शब्द बनकर रह गये हैं
भावना, कर्तव्य सब गुम हो गये हैं
खो गये नारी के रक्षक अब कहाँ हैं
बन गये रक्षक ही भक्षक अब जहां में
आपसी विश्वास खोता जा रहा है
आदमी ख़ुद को डुबोता जा रहा है
धर्म केवल एक-पैसा रह गया है
हाय यह इन्सान कैसा हो गया है
स्वार्थ का ही रंग केवल रह गया है
शेष सब बेरंग होकर रह गया है
इस से पहले जानवर बन जायें सब जन
जाग जाओ!
पाप अत्याचार से सबको बचा लो
आत्मा जो सो गई निद्रा में गहरी
यत्न करके उसको फिर से अब जगा लो
जाग जाओ!
जो बचा है शेष
उसको अब बचा लो!

सहारे

है नहीं मुमकिन
वापिस लाना उस वक़्त को
जो गुज़र गया
है नहीं मुमकिन
पकड़ पाना उस लम्हे को
जो छूट गया
लाख पीछा करो
वक़्त की उन परछाइयों का
हाथ नहीं आयेगा
एक कण भी
वक़्त की गहराइयों का
न ढूँढ पाओगे उसे
देकर जीवन भी
न छू पाओगे उसे
कर लो मुट्ठियों में बंद
जो क्षण हैं पास तुम्हारे
छीन लो वक़्त से कुछ क्षण
जो बनें खास तुम्हारे
भूल जाओ अतीत की
अनचाही यादों को
सोचो न कभी भविष्य के
कुछ झूठे वादों को
जी लो आज के कुछ पल
वे ही तुम्हारे हैं
खींच लो वक़्त के बंद हाथों से
आशाओं के कुछ धागे
वे ही तुम्हारे सहारे हैं

मंज़िलों की राहें

तुम अपनी दृष्टि में
प्रकाश भरकर चलो
मंज़िलों की राहें
स्वयं ही प्रकाशित हो जायेंगी
तुम अपने हृदय में
आशा की ज्योति जलाकर चलो
मंज़िलों की राहें
स्वयं ही ज्योतित हो जायेंगी
तुम तम को त्याग कर
प्रकाश की ओर चलो
लक्ष्य की पगडण्डियाँ
स्वयं ही उद्‌भासित हो जायेंगी
तुम असत्य से सत्य की ओर चलो
तुम्हें देख कर
सम्पूर्ण सृष्टि की आँखें
आशान्वित हो जायेंगी
तुम सद्‌कर्मों से
निराशा को आशा में बदल दो
अन्धकार को प्रकाश में बदल दो
मंज़िलों की राहें स्वयं ही
प्रकाशित हो जायेंगी

ख़ुशी का ख़जाना

ख़ुशी ढूँढने को कहाँ चल पड़े तुम
ख़ुशी तो तुम्हारे ही अन्दर छुपी है
ये बाहर की दुनिया में क्यों खो रहे हो
ये काँटे क्यों ख़ुद के लिये बो रहे हो
जो किस्मत में सुख-दुःख है ख़ुद ही निभाने
सुनाकर सभी को बनो न दीवाने
अगर कर सको तो करो काम इतना
जो साथी हैं देखो उन्हें ग़म है कितना
तुम उनके ग़मों को अगर कम करोगे
तो अपना हृदय भी ख़ुशी से भरोगे
ख़ुशी का ख़ज़ाना भरे जाओ दिल में
लुटा दो उसे अपनों पर पूरे दिल से
नहीं शाँति बाहर कहीं भी मिलेगी
तुम्हारे ही अन्तर में वो तो छुपी है
ख़ुशी ढूँढ़ने को कहाँ चल पड़े तुम
ख़ुशी तो तुम्हारे ही अन्दर छुपी है

दर्द की चूनर

ओढ़ ली है एक चूनर दर्द की
दिल से निकली आह ग़म की सर्द सी
धूमते फिरते हैं दुनिया में
छुपाये दिल के राज़
छोड़कर जो चल दिये
हम दे रहे उनको आवाज़
टूटते सपनों के अहसासों तले
हम दबे रहते हैं अपने बोझ से
छूटते अपनों को कैसे रोक लें
कोई दो आवाज़ उनको जोर से
हो रही है साँस भी अब जर्द-सी
अपने हाथों ख़ुद को पहनाते कफ़न
कर लिया हमने है यूँ ख़ुद को दफ़न
ढूँढ़ना चाहें कभी ख़ुद को अगर
ढूँढ़ न पाये हमें ख़ुद की नज़र
कब तलक पीना है जीने का ज़हर
कब तलक सहना है जीने का क़हर
किस्मतों पे छा गई है गर्द-सी
दिल से निकली आह ग़म की सर्द-सी

पूरी मौत

मेरी नाकाम हसरत का
जनाज़ा उठ गया यारो
मैं सब कुछ जानकर भी
दिन दहाड़े लुट गया यारो
हमारे बाद मरने के
कहीं चर्चे हमारे हों
तो कहना एक ग़मगी दिल
कहीं पर बुझ गया यारो
हमारी ज़िन्दगानी तो
महज टूटा खिलौना थी
कि मरकर एक पूरी मौत तो
मैं मर गया यारो
ज़नाज़ा जब मेरा निकले
तो बस यह शेर पढ़ देना
कोई किस्मत का मारा
किस्मतों से छुट गया यारो

तुमको खोकर

तुमको खोकर ज़िन्दगी तो
ज़िन्दगी लगती नहीं
एक भी लौ आस की
अब तो कभी जगती नहीं
मैं सुनाऊँ किसको
अपने दिल के ग़म
मैं दिखाऊँ किसको
अपने दिल के दाग़
अब न जीवन में कभी
आयेगी सावन की फुहार
अब न कलियों की चटक
न फूलों की महक
न मुस्काये बहार
ज़िन्दगी जीना लगे इक श्राप-सा
ज़िन्दगी जीना लगे इक पाप-सा
तुमने मुँह मोड़ा
जमाना मुड़ गया
ज़िन्दगी से दर्द का
रिश्ता अचानक जुड़ गया
एक बार आकर बताओ
मैं तुम्हें कैसे भुलाऊँ
दिल में जो तूफाँ उमड़ते
मैं तुम्हें कैसे दिखाऊँ
दिल की अग्नि
अब कभी बुझती नहीं
तुमको खोकर ज़िन्दगी तो
ज़िन्दगी लगती नहीं

झूठी आशा

एक बार लहराया सागर
आशाओं का
इस सूने, सूखे तन-मन में
सूख गया दूजे पल सारा
शून्य भर गया
अन्तस् के उन्मुक्त गगन में
आशा और निराशा की
लहरों पर चढ़कर
डोल रही है जीवन नैया
चाह रही
लहरों की भाषा को पढ़ पाये
उन्हें सौंप दे जीवन अपना
और बना ले उन्हें खिवैया
कैसा आना-जाना सुख का
जीवन एक खिलौना दुख का
फिर भी मानव
जाने किस झूठी आशा में
लगा हुआ दिन-रात
बुने जाता है सपने
जाने किस सुख की आशा में
डूब-डूबकर
हो जाता आसक्त मगन है

आशा दीप

दीप जलता रहे लौ बिखरती रहे
ज़िन्दगी दर्द में भी सँवरती रहे

प्रेम की प्यार की, सुख की वीणा बजे
न हो दुर्भावना का जनम अब कभी
सब समझ लें कि सबका पिता
एक भ्रातृत्व का भाव रखें सभी

न रहे वर्ग संघर्ष की भावना
प्यार की धुन हमेशा मचलती रहे

कर्म में हों समुद्यत सभी इस तरह
न हो प्रतिदान का भाव मन में कभी
कर्म ऐसे हों कल्याणकारी सुखद
उन्नति के शिखर पर चढ़े ज़िन्दगी

लोक कल्याण का भाव मन में रहे
न गिरे यह मनुजता सँभलती रहे

न निराशा की गहराइयाँ ही डसें
कष्ट पीड़ायें डरकर के मुँह फेर लें
पग जो आगे बढ़ें वह रुकें न कभी
चाहे बादल घने से घने घेर लें

दुःख में सुख की लौ झलकती रहे
माँ धरा प्यार से यह महकती रहे
दीप जलता रहे लौ बिखरती रहे
ज़िन्दगी दर्द में भी सँवरती रहे

उच्छृंखल बूँद

मैं भटकती
एक बूँद सागर की
बादलों पर सवार हो
घूमने निकली थी
कुछ नई खुशियाँ, एक नई दुनिया
देखने निकली थी
मन में संजोये कुछ नये
सपने सोचा मिलेंगे कुछ अपने
जंगल, पहाड, नदियाँ, तालाब
झरने, झीलें, नाले
जलप्रपात मतवाले
सबसे मिली, सबसे हिली
फिर आगे चली।
एक दिन अचानक
बादलों ने छोड़ दिया साथ
मैं मल के रह गई हाथ
और जा पड़ी सागर की
सीपी के मुख में
जोर से गिरी थी
फिर भी एक खुशी थी
जो दे रही थी सहारा
इस भारी दुख में
वापिस आ पहुँची हूँ मैं
अपने ही घर में
अब न जाऊँगी घूमने
किसी भी शहर में
पर यह क्या?
मैं तो बन गई मोती
रह गई सपनों में सोती
फिर एक दिन आया एक मानव
और मुझे ले गया
हृदयहीन मानव के हृदय को सजाने के लिये
मैं हार बन कर हार गई
मेरी उच्छृंखलता मुझे मार गई

अन्तिम प्रहर

कभी अतीत याद आता है
कभी भविष्य डराता है
वर्तमान तो क्षण-क्षण
तड़पाता है
जीवन का हर पल
यूँ बीत जाता है
अन्तर्घट हर पल
यूँ रीत जाता है
ज़िन्दगी का ये
कैसा क़हर है?
हर तरफ घिरता
शून्य और अंधेरा
हर तरफ अनजाने-डरावने
प्रेतों का घेरा
असहनीय वेदना
मृत होती चेतना
टूटते रिश्ते
छूटते सम्बल
ज़िन्दगी का ये
कैसा ज़हर है?
कुण्ठित भावनाएं
लुण्ठित मान्यताएँ
धूल धूसरित आदर्श
उत्कर्ष के बदले अपकर्ष
स्वयं पर असीमित
आक्रोश एवं क्रोध
एक अज्ञात-सी
अस्तित्वहीनता का बोध
शायद ज़िन्दगी का ये
अन्तिम प्रहर है।

स्नेह के कुछ पल-वृद्ध की कामना

स्नेह की दो बूँद दे दो
और इससे अधिक की तो
कामना मन में नहीं है
प्यार के सम्मान के
कुछ भाव चेहरे पर दिखा दो
और इससे अधिक की तो
भावना मन में नहीं है
ज़िन्दगी में ज़हर, अमृत
तो सभी हम पी चुके हैं
गहन दुख और पूर्ण सुख के
तो सभी क्षण जी चुके हैं
राष्ट्र के परिवार के तो
कर चुके कर्तव्य पूरे
क्षणिक जीवन के सभी तो
कर लिए हैं लक्ष्य पूरे
अब करोगे पूर्ण तुम
छोड़ा जो हमने कुछ अधूरा
दे दिया अधिकार अपना
कर वसीयत तुमको पूरा
थकित तन मन चाहता है
पुष्ट कंधों का सहारा
सिर्फ़ कुछ पल चाहते हम
शेष सब कुछ है तुम्हारा
थक गए पर टूटने की
चाहना मन में नहीं है
स्नेह की दो बूँद दे दो
और इससे अधिक की तो
कामना मन में नहीं है

दर्द, दिल और मुक्ति

दिल में छुपे कुछ दर्द ऐसे होते हैं
जिन्हें हम कहना चाहकर भी
कह नहीं पाते
ये दर्द हमें अपनों से ही नहीं
अपने से भी दूर कर देते हैं
देह, दिल और दिमाग़ को
चकनाचूर कर देते हैं
कभी ये दर्द दिल में धड़कते हैं
कभी आँखों से बरसते हैं
कभी होठों पे फड़कते हैं
पर जब जीभ से छलकते हैं
तो बत्तीस पहरेदार
जीभ को कसकर दबा देते हैं
उसे सीमा पार करने की
अच्छी सजा देते हैं
फिर ये दर्द वापिस दिल में जाकर
छिप जाते हैं
दिल को घेर लेते हैं
अपनी मर्जी से
दिल की गति को
फेर लेते हैं
फिर एक दिन
हृदय की गति
बेहद बढ़ जाती है
और अति की सीमा को पारकर
अचानक ठहर जाती है
शायद यही वह स्थिति है
जब हृदय सारे दुख भूलकर
मुक्ति को प्राप्त कर लेता है
शायद यही वह स्थिति है
जब दर्द दिल को मुक्ति दे देता है

बचपन

मैंने अपना बचपन देखा
अपनी पोती के बचपन में
ऐसा सुख तो कभी मिला न
जो पाया है अब पचपन में

उसका हँसना और मुस्काना
उसकी खुशी भरी किलकारी
उसकी एक-एक हरकत पर
मैं तो अपना तन-मन वारी

ठुमक-ठुमक पग धर जब आती
सारी सृष्टि झूम उठती है
नन्हें हाथों से छू ले तो
अन्तरतम् तक छू लेती है

उसके एक-एक आँसू में
सात समन्दर मैंने देखे
उसकी एक हँसी के अन्दर
अनगिन फूल विहँसते देखे

उसके एक शब्द में मैंने
सारे वेद शास्त्र पढ़ डाले
उसके मुख को देख-देखकर
ढेर चित्र मैंने गढ़ डाले

उसके खाने से ही मेरी
भूख प्यास सारी मिट जाये
प्राण निकल जाते हैं तन से
बैठ जाये गर वो अनशन में

मैंने अपना बचपन देखा
अपनी पोती के बचपन में
ऐसा सुख तो कभी मिला न
जो पाया है अब पचपन में

ध्रुव सत्य

जीवन के
दो ही ध्रुव सत्य हैं
एकसाँस का आना
दूसरा साँस का जाना
सम्पूर्ण सृष्टि का आधार
ये दो सत्य हैं
इन्हीं दो के बीच
सारी सृष्टि घूमती है
साँस का आना
जीना
साँस का जाना
मरना
कितनी साधारण
सरल-सी परिभाषा
जबकि एक का अर्थ आशा
दूसरे का निराशा
एक सृजन
दूसरा विनाश
एक अंधकार
दूसरा प्रकाश
फिर भी आश्चर्य है
मानव जन्म लेते ही
दोनों ध्रुव छू लेता है
जन्म के साथ ही
एक अटल सत्य लेकर आता है
जन्म लेने का अर्थ
मृत्यु से पक्का नाता है

बुढापा

दृष्टि पथ पर चली जा रही
एक झुकी-सी जर्जर काया
देख जिसे अचरज होता है
यह कैसी कुदरत की माया
एक दिवस यह भी जनमा था
एक सुकोमल खिले फूल-सा
और पला था
मात-पिता की स्नेह भरी छाया में
यौवन में यह भी विहँसा था
मगन हुआ था
संगी-साथी मित्रों की माया में
फिर गृहस्थ का धर्म निभाया
लुटा दिया तन-मन-धन
अपनी पत्नी पर, बच्चों पर
पर यह आज हुआ क्या इसको
कहाँ गए वो लाल जिन्हें पाला था
लुटा दिया धन-धान्य और तन-मन वारा था
आज अकेला भूखा-प्यासा
शून्य दृष्टि है लुटा हुआ सा
चला जा रहा लक्ष्यहीन-सा
छूट गये सब रिश्ते नाते
किससे अपना दुखड़ा बाँटे
जीवन का सच
यही बुढ़ापे की है माया
जर्जर अन्तर
जर्जर काया

ख़ून के आँसू

लहू-लहू बदन हुआ
लहू-लहू हुआ जिग़र
ये किसके हाथों से हुआ
ये करने वाला है किधर
ये कौन बदनसीब था
जो ख़ून-ख़ून हो गया
पति-पिता या पुत्र था
जो सिर्फ़ ख़ून रह गया
पला था कितने नाज़ से
जो लाश बन के रह गया
ज़रा ही पहले पास था
जो इक तलाश बन गया
अभी ज़रा ही देर में
ये लाश भी न रह जायेगी
अपनों के काँधे पे चढ़कर
जायेगी
फिर न आयेगी
इस बदनसीब माहौल में
ऐसे
कितने ही जिग़र के टुकड़े
जाते रहेंगे
और
हम उनके ख़ून के लिये
ख़ून के आँसू बहाते रहेंगे

डोर थाम लो

यह कौन उड़ा रहा है
पतंगों की तरह सबको
यह किसकी डोर
किसके हाथों मे जा रही है
माँगेगा कौन किससे
इन्साफ़ और कैसे
यह डोर तो फिसलती
हाथों से जा रही है
यह ख़ून किसका है जो
सड़कों पे बह रहा है
वह कौन है, जो चुप हो
जुल्मों को सह रहा है
चोरों या डाकुओं को
क्यों रहनुमा बनाते
क्यों ज़िन्दगी की राहें
हो बदनुमा बनाते
बहनों और बेटियों की
इज्ज़त के ठेकेदारो
अब वक़्त आ गया है
आकर उन्हें बचा लो
नोटों की राजनीति
वोटों से बदल डालो
कुर्सी को जाती सड़कें
टूटें न, तुम बचा लो
इन्साफ़ की पतंगे
अनजाने कट न जायें
अब डोर थाम लो तुम
इन्सानियत बचा लो

अनदेखी मौत

राम का नाम सत्य है
इस सत्य से मेरा भी
बहुत निकट का नाता है
इसीलिये जब किसी अर्थी के साथ
राम नाम सत्य की आवाज़ सुनती हूँ
तो मैं स्वयं को बहुत दुर्बल
और क्षत-विक्षत महसूस करती हूँ
शायद इसीलिये कि हर मानव से
मेरा एक अनाम-सा रिश्ता है
शायद वही रिश्ता जो मेरा राम नाम से है
इसीलिए हर मानव की मौत के साथ
मैं एक पूरी मौत मर जाती हूँ
शायद इस अहसास से डर जाती हूँ
कि राम नाम की अगली आवाज़
मेरे पीछे से ही आयेगी
शायद इसीलिये रामनाम के साथ
जाते मानव को
में विस्फारित नेत्रों से देखकर
ठहर जाती हूँ
एक अनदेखी मौत से
सिहर जाती हूँ
और एक बार फिर
एक अनदेखी मौत
मर जाती हूँ

वोट की राजनीति

यह
जिसका जनाज़ा
सड़क पर जा रहा है
जिसकी सफेद चादर पर
लाल ख़ून का निशान
साथ चलने वालों के ख़ून को
सफ़ेद कर रहा है
जिसकी यादों के साये
उनके ख़ून को बर्फ़ बना रहे हैं
कल तक वह उनका अपना था
जिसकी आँखों में भविष्य का
सुन्दर सपना था
वह भी कुछ बनना चाहता था
फिर ये किसके जुनून ने
एक सुन्दर सपनों से भरे
जीवन्त इन्सान को
जहू-लुहान कर
लाश में बदल दिया
किसको यह सोचने की फुर्सत है
कि यह नौजवान
जिसका ज़नाज़ा
सड़क पर जा रहा है
किसी को गद्दी पर बैठाने गया था
खुद नीचे रह कर
उन्हें ऊँचा उठाने गया था
बन गया
वोट की राजनीति का शिकार
वोट की राजनीति ने किया
उसके जीवन पर पहार

उलझती डोर

इन उड़ती हुई पतंगों की
डोर संभाल लो
इन कटती हुई पतंगों को
बचा सको तो बचा लो
फिर ये डोर जाने किन हाथों में जायेगी
फिर ये डोर हाथ नहीं आयेगी
कौन किसको कन्नी दे रहा है
कौन किसकी डोर काट रहा है
कौन कटी पतंग लूट रहा है
किसके हाथों यह ढाँचा टूट रहा है
ठीक से देख लो
वरना तुम दोनों
कन्नी देते लेते रह जाओगे
पतंग कोई तीसरा ले जायेगा
दो बिल्लियों की लड़ाई में
बंदर रोटी ले जायेगा
फिर
इन कटी हुई पतंगों को
कौन इन्साफ़ देगा
कौन इनके दुख दर्द मिटायेगा
कौन इन्हें सही राह दिखायेगा
इस प्रश्न पर
सब मौन हैं
भला आज के युग में
इतना समर्थ
कौन है
अभी तो ऊँचा उठने के चक्कर में
हर पतंग और नीचे गिरती जा रही है
और डोर है
कि और
उलझती जा रही है

नन्हे दिये

ज़िन्दगी की खण्डहर होती इमारत में,
जब-जब नींव हिलती नज़र आई
तब-तब कोई मसीहा
तिनके का सहारा बनकर आ गया
और उस अँधियारे वीराने में
एक नई आस का दिया जला गया
ऐसे ही नन्हे-नन्हे दियों की
एक पंक्ति बनती चली जा रही है
जो मेरी ज़िन्दगी को
दीवाली की तरह सजा रही है
ज़िन्दगी के आखिरी पड़ाव पर
जब मैं पीछे मुड़कर देखूँगी
तो मुझे हर मोड़ पर
एक मसीहा नज़र आयेगा
जो मेरी यादों को
अपनी मुस्कुराहटों से सजायेगा
और मैं आने वाली नस्लों को
ये नन्हे दिये जलाये रखने की
सीख दे कर
चैन से सो जाऊँगी

वही पल

तुम्हारी स्मृति की चूनर
जब मुझे
अपने साये तले ढक लेती है
तब मैं
दुनिया के सारे दुःख-दर्द भूलकर
एक नई दुनिया में खो जाती हूँ
मेरे दिन और रात
तुम्हारी यादों से महक जाते हैं
एक बार फिर
मेरे बीते बरस
कुछ पल को ठहर जाते हैं
मैं तुम्हारी स्मृति की चादर तले
स्वयं को इतना सुरक्षित महसूस करती हूँ
जैसे माँ की पाँखों तले छिपी एक चिड़िया
या भगवान के मंदिर में बैठा एक भक्त
इस चादर की छाँव तले
मैं न कमज़ोर हूँ न अशक्त
तुम्हारी स्मृति के झरोखों से
झाँक-झाँककर
जो पल मैं चुरा लाती हूँ
उन्हें मैं अपनी चूनर में टाँक लेती हूँ
मेरे वही पल
मेरी वही पल
मेरी चूनर में चमकते
सूरज चाँद सितारे हैं
वही पल
मेरी बची ज़िन्दगी के सहारे हैं

प्रकाशित कृतियाँ

अनुभव

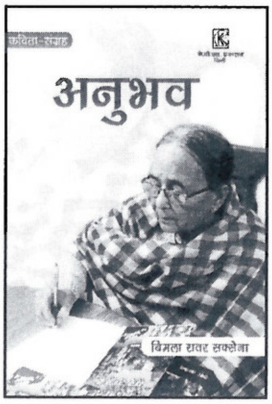
कविता-संग्रह
अनुभव
विमला रावर सक्सेना

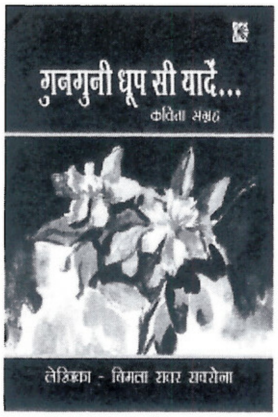
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

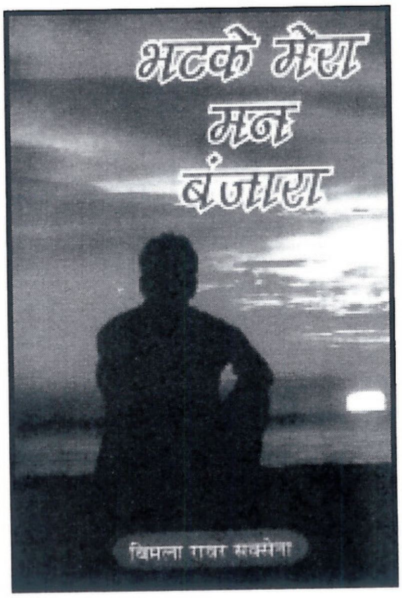
भटके मेरा मन बंजारा
विमला रावर सक्सेना

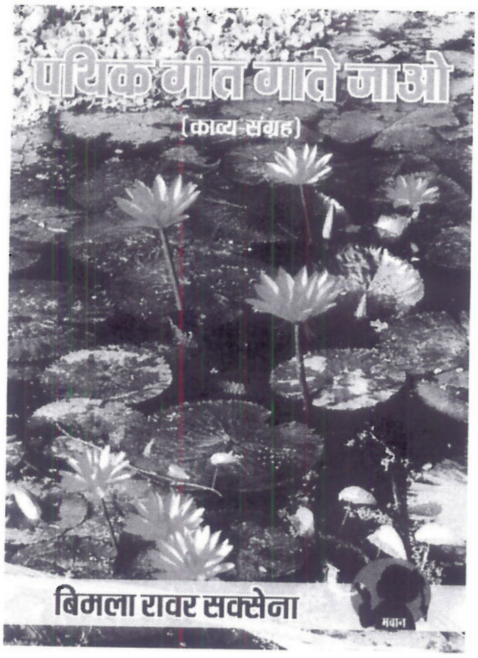
पथिक गीत गाते जाओ
(काव्य-संग्रह)
बिमला रावर सक्सेना

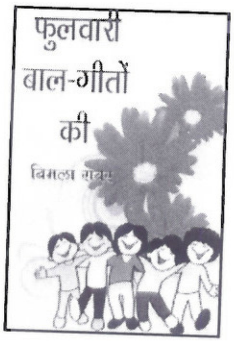
फुलवारी
बाल-गीतों
की

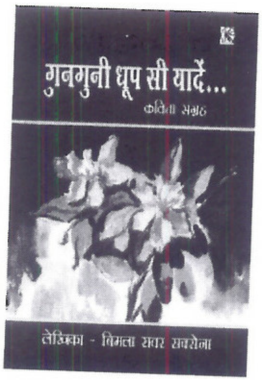
गुनमुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

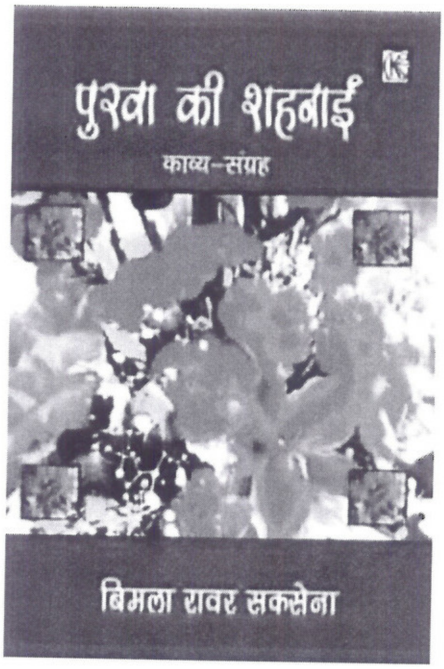
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

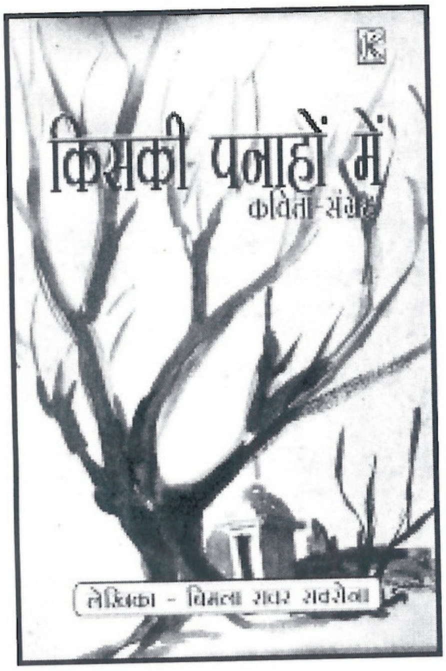
किसकी पनाहों में
कविता-संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

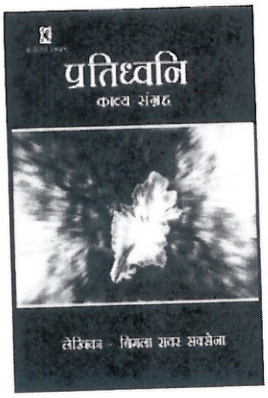
प्रतिध्वनि
काव्य संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

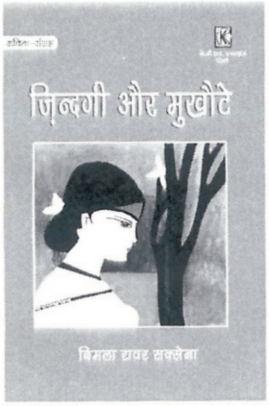
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी और मुखौटे
बिमला रावर सक्सेना

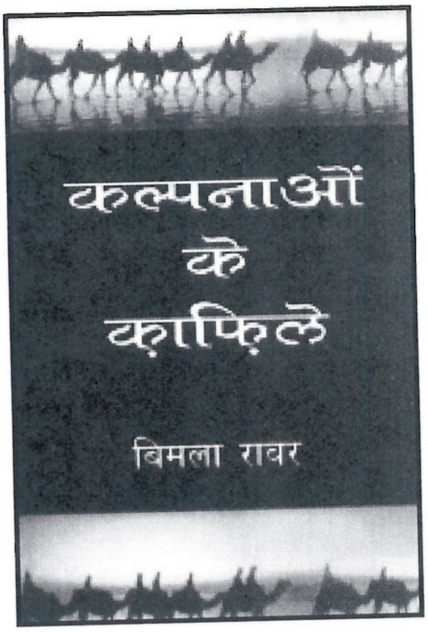
कल्पनाओं के क़ाफ़िले
बिमला रावर

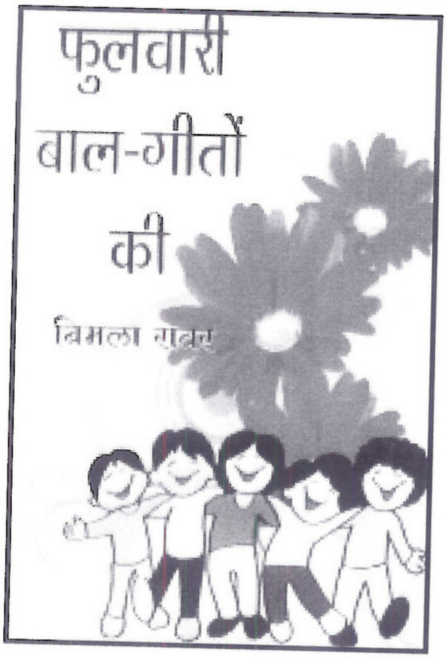
फुलवारी
बाल-गीतों
की

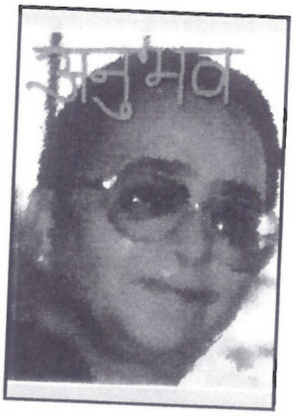
अनुभव

भटके मेरा
मन
बंजारा

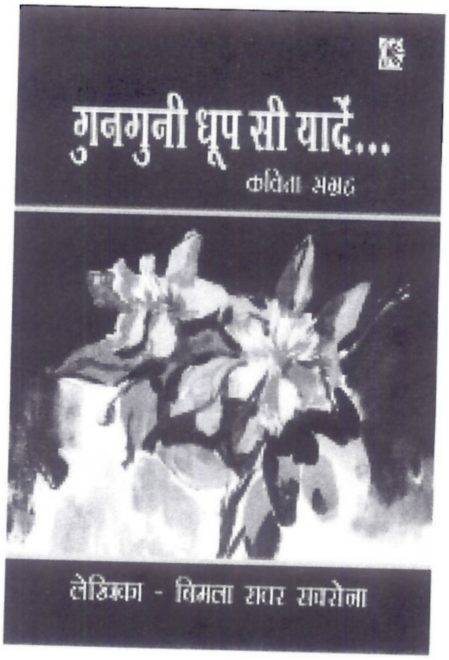
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

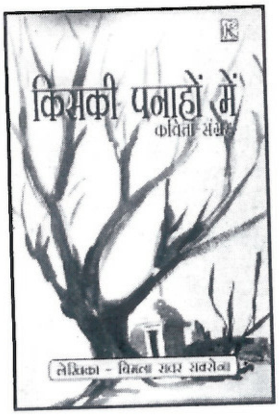
किसकी पनाहों में
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

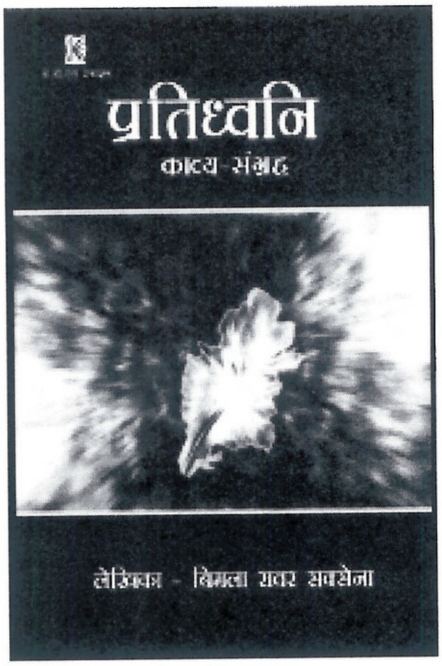
प्रतिध्वनि
काव्य-संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

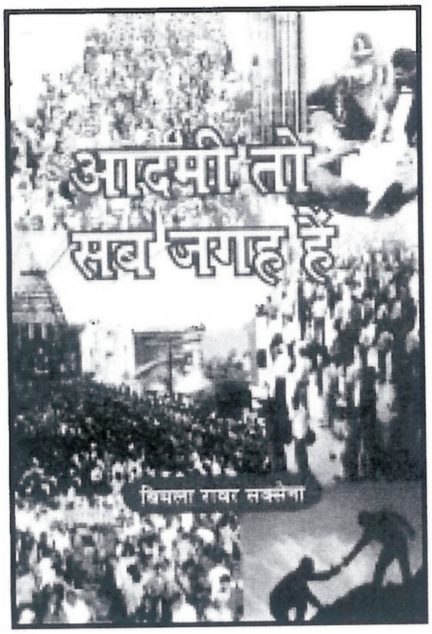
आदमी तो सब जगह हैं
विमला रावर सक्सेना

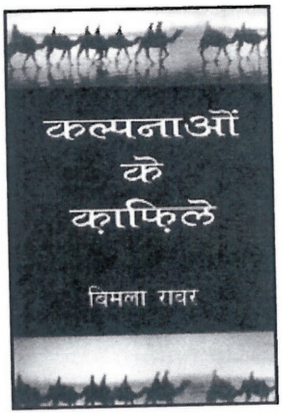
कल्पनाओं के काफ़िले
विमला रावर

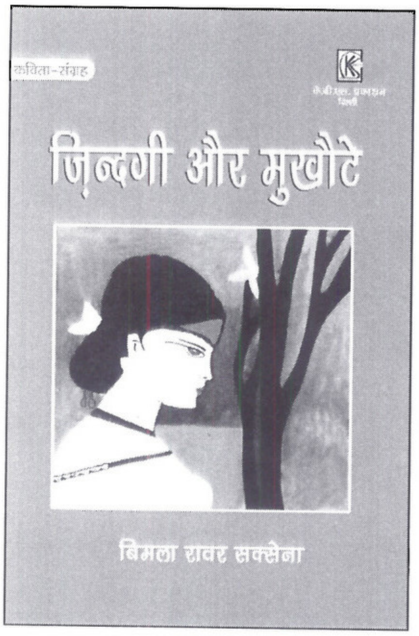
कविता-संग्रह
के.बी.एस. प्रकाशन
दिल्ली
ज़िन्दगी और मुखौटे
बिमला रावर सक्सेना

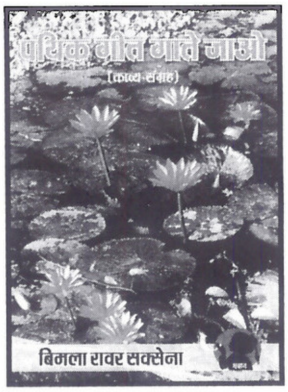
पथिक गीत गाते जाओ
(काव्य-संग्रह)
बिमला रावर सक्सेना

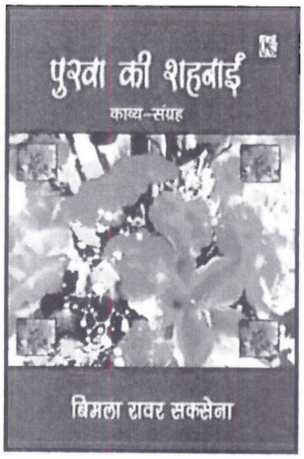
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

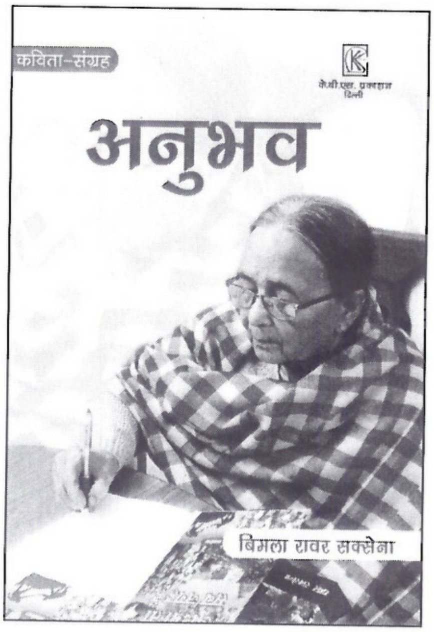
कविता-संग्रह
के.बी.एस. प्रकाशन
दिल्ली
अनुभव
बिमला रावर सक्सेना